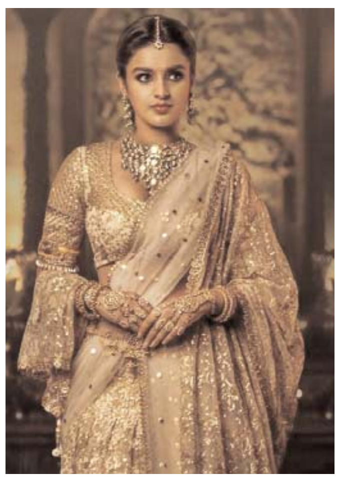

दैनिक सीहोर जिले का प्रथम दैनिक K ✌ K RNI No.MPHIN/2003/10309

क्षितिज ✌ किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे | सीहोर जिले, होशंगाबाद संभाग एवं जबलपुर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र समाचार-पत्र

प्रेरणापुंज -विचित्र कुमार सिन्हा | वर्ष-22 अंक-59 | सीहोर, गुरूवार 17 अप्रैल 2025 | पृष्ठ-8 | मूल्य -1 रूपये | सम्पादक- कृष्णकान्त सक्सेना

वक्फ संशोधन कानून धार्मिक मामलों में दखल, सुप्रीम कोर्ट में सिब्बल ने रखी दलील

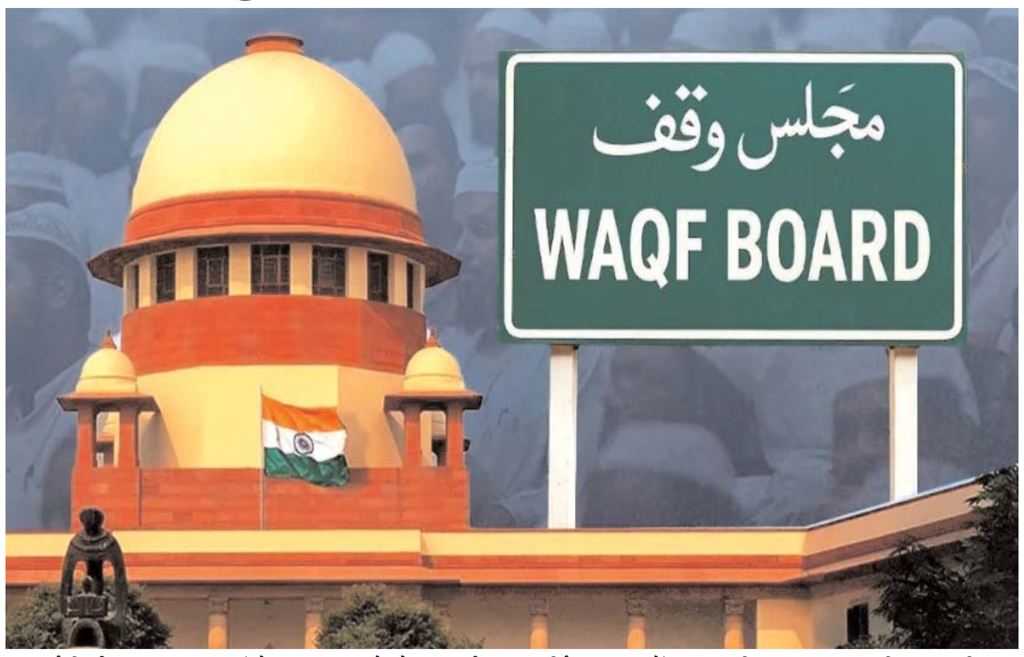

नई दिल्ली,(ए.)। वक्फ संशोधन कानून को लेकर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को दोपहर दो बजे से सुनवाई शुरु की गई। वक्फ कानून के खिलाफ देशभर से दायर की गई याचिकाओं पर चीफ जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस के.वी. विश्वनाथन की तीन जजों की पीठ सुनवाई कर रही है। हालांकि, मौजूदा समय में वक्फ से जुड़े सभी मामलों की सुनवाई नहीं हो सकी है।वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा कि वक्फ संशोधन कानून संविधान के अनुच्छेद 26 का उल्लंघन करता है, क्योंकि यह धार्मिक समुदायों के आस्था और उनके धार्मिक संस्थानों के संचालन के अधिकारों में हस्तक्षेप करता है। उन्होंने इसे बुनियादी धार्मिक जरूरतों का अतिक्रमण करार दिया। अधिवक्ता सिब्बल ने अदालत को बताया कि 1995 के वक्फ कानून के तहत सेंट्रल वक्फ काउंसिल के सभी सदस्य मुस्लिम होते थे, जैसा कि धर्मार्थ संस्थानों के लिए परंपरा है - जैसे हिंदू संस्थानों में हिंदू सदस्य और सिख संस्थानों में सिख। उन्होंने कहा कि नया संशोधन इस परंपरा और संतुलन को तोड़ता है। वरिष्ठ अधिवक्ता सिब्बल ने एक और बिंदु पर गंभीर चिंता जताई कि संशोधित कानून में दावा करने की समयसीमा केवल दो साल रखी गई है। कई वक्फ संपत्तियां अब तक रजिस्टर्ड नहीं हैं, ऐसे में समयसीमा का पालन कैसे हो? उन्होंने कहा कि इस प्रावधान से अतिक्रमण करने वालों को कानूनी फायदा मिल जाएगा। इस पर सीजेआई ने कहा, कि सिर्फ समयसीमा तय करना इसे असंवैधानिक नहीं बनाता।

सीजेआई बोले- समय कम है मुद्दे की बात कहें

सुनवाई के दौरान सीजेआई संजीव खन्ना ने अधिवक्ता सिब्बल से कहा, कि हमारे पास समय सीमित है, कृपया सिर्फ प्रमुख और जरूरी बिंदुओं पर ध्यान दें। उन्होंने प्रावधानों को लेकर उठे सवालों पर भी स्पष्ट किया कि कानून में समयसीमा तय करने को असंवैधानिक नहीं ठहराया जा सकता। यहां जस्टिस विश्वनाथन ने कहा, कि संपत्ति और धर्म को अलग रखा जाना चाहिए। संपत्ति का मामला अलग है, सिर्फ उसका प्रबंधन ही धार्मिक दायरे में आ सकता है। बार-बार यह कहना ठीक नहीं कि ये जरूरी धार्मिक कार्य है।

वक्फ कानून के खिलाफ याचिकाकर्ताओं की लंबी सूची है। याचिकाएं दायर करने वालों में प्रमुख राजनीतिक और धार्मिक हस्तियों की बात करें तो कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद, एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी, आरजेडी से मनोज कुमार झा, टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा, एसपी सांसद जिया-उर-रहमान, दिल्ली के आप विधायक अमानतुल्लाह खान, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमीयत उलेमा-ए-हिंद, डीएमके, आईयूएमएल, वायएसआरसी, तमिल अभिनेता विजय और एपीसीआर (सिविल राइट्स संगठन) के नाम प्रमुख हैं।इसके दूसरी तरफ राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, असम, उत्तराखंड, और छत्तीसगढ़ की राज्य सरकारों ने इस कानून के समर्थन में हस्तक्षेप याचिकाएं दायर की हैं। केंद्र सरकार ने पहले से ही कैविएट दाखिल कर रखा है ताकि कोई भी निर्णय हो उससे पहले सरकार को सूचित किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंदसौर में सोमयज्ञ में आहुति दी।

सीएम ममता बनर्जी से मिले इमाम, किया दावा- बंगाल में नहीं लागू होगा वक्फ कानून

कोलकाता (आरएनएस)। कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में बुधवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्यभर से आए इमामों संग अहम बैठक की। बातचीत के केंद्र में वक्फ कानून समेत मुर्शिदाबाद, मालदा और भानगढ़ में हुई हिंसक घटनाएं थीं। बैठक में शामिल इमामों ने आईएएनएस से बात की। ऑल इंडिया इमाम मुअज्जिन एंड सोशल वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन के जनरल सेक्रेटरी मौलाना अब्दुल रज्जाक ने ममता बनर्जी पर भरोसा जताते हुए कहा कि वक्फ संशोधन कानून को बंगाल में लागू नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह कानून मुस्लिम समुदाय की जमीन और हक को छीनने वाला है और इसे ममता बनर्जी ही रोक सकती हैं। उन्होंने मुर्शिदाबाद और मालदा में हुई हिंसा को बाहरी लोगों की साजिश बताया और कहा कि इस्लाम हिंसा को नहीं मानता।

इमामों संग बैठक को लेकर वाइस प्रेसिडेंट मुफ्ती शहजुल इस्लाम ने कहा, आज की बैठक पहले से तय थी और पूरे राज्य के इमाम इसमें शामिल हुए। उन्होंने अपील की कि विरोध शांतिपूर्ण तरीके से हो और किसी को भी उकसाने का मौका न दिया जाए।

यूपी में एक बार फिर ट्रेन पलटाने की साजिश, इंजन से टकराया लकड़ी का बड़ा टुकड़ा, घबराए यात्री

लखनऊ(ए)। राजधानी लखनऊ के रहीमाबाद रेलवे स्टेशन के पास एक बार फिर से ट्रेन को पलटाने की कोशिश की गई। लोको पायलट की सूझबूझ से एक बड़ा हादसा टल गया। लखनऊ-मुरादाबाद रेल ट्रैक पर रहीमाबाद के पास रेल इंजन से लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा टकराया है।इंजन में पेड़ की डाली फंसने के बाद लोको पायलट ने फौरन इमरजेंसी ब्रेक लगा ट्रेन को रोक लिया। फिर रेलवे ट्रैक पर रखे लकड़ी के भारी-भरकम लठ्ठे को हटाते हुए रेलवे अधिकारियों को सूचना दी। यह कोई पहली घटना नहीं है, पूर्व में भी मलिहाबाद रेलवे स्टेशन के पास कुछ शरारती तत्वों ने ट्रेन को डिरेल करने कोशिश की थी। फिलहाल, पुलिस बीटीएस की मदद से मामले की जांच में जुटी है।रहीमाबाद इंस्पेक्टर आंनद द्विवेदी के मुताबिक, रेलवे के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (ट्रैकमैन) राजेश राजन ने कुछ शरारती तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

सोनिया-राहुल गांधी और सैम पित्रोदा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल, कांग्रेस कार्यकर्ताओं का ईडी दफ्तर के बाहर प्रदर्शन

नई दिल्ली ,(आरएनएस)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और ओवरसीज कांग्रेस प्रमुख सैम पित्रोदा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। इस कार्रवाई के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया है।कांग्रेस का आरोप है कि केंद्र सरकार राजनीतिक विरोधियों को दबाने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। पार्टी ने इसके विरोध में देशभर में आंदोलन का ऐलान किया है। राज्य मुख्यालयों में ईडी कार्यालयों के बाहर और जिलों में केंद्र सरकार के दफ्तरों के सामने विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं।कांग्रेस नेताओं का कहना है कि यह कार्रवाई लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला है,

नेहरू-गांधी परिवार ने देश को संपत्ति दी है, ली नहीं : दिग्विजय सिंह

भोपाल (आरएनएस)। नेशनल हेराल्ड से जुड़े मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दायर की गई चार्जशीट में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के नाम आने पर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह बचाव में सामने आए हैं और कहा है कि गांधी परिवार ने देश को संपत्ति दी है, अपने लिए अर्जित नहीं की। साथ ही उन्होंने राज्य के कार्यकर्ताओं से विरोध दर्ज कराने की अपील की है। ईडी ने नेशनल हेराल्ड से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जो चार्जशीट दायर की है, उसमें सोनिया गांधी, राहुल गांधी सहित कांग्रेस के कई नेताओं के नाम हैं। इस पर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने एक बयान जारी कर कहा है, देश में नेहरू-गांधी ने 1930 से लेकर आज तक अपनी संपत्ति देश को ही सौंपी है। कभी खुद के लिए कोई स्वार्थ सिद्धि से कोई संपत्ति उन्होंने अपने लिए अर्जित नहीं की है, कोई भ्रष्टाचार का आरोप उन पर आज तक नहीं लगा है।

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शाह एवं मुख्यमंत्री डॉ. यादव नीमच में सी.आर.पी.एफ. स्थापना दिवस समारोह में होंगे शामिल

भोपाल(आरएनएस)। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 86वें स्थापना दिवस समारोह में केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह 17 अप्रैल 2025 को नीमच स्थित सी.आर.पी.एफ. के ग्रुप सेंटर में सीआरपीएफ स्थापना दिवस परेड में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे। समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी विशेष रूप से शामिल होंगे।सी.आर.पी.एफ. स्थापना दिवस प्रतिवर्ष 19 मार्च को मनाया जाता है। इसी दिन वर्ष 1950 में तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा बल को ध्वज प्रदान किया गया था। इस वर्ष परेड 17 अप्रैल को विस्तारित समारोहों के तहत आयोजित की जा रही है। नीमच की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी इस अवसर पर विशेष महत्व रखती है। 27 जुलाई 1939 को ब्रिटिश शासनकाल में क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस की स्थापना की गई थी, जिसे स्वतंत्रता के पश्चात 28 दिसंबर 1949 को देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने "सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स (सीआरपीएफ)" नाम दिया। सी.आर.पी.एफ. ने देशी रियासतों के एकीकरण से लेकर आंतरिक सुरक्षा, उग्रवाद-आतंकवाद विरोधी अभियानों, अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना, वीआईपी सुरक्षा और आपदा प्रबंधन तक अनेक मोर्चों पर सशक्त भूमिका निभाई है।

आखिरकार पकड़ी गई दामाद के साथ भागी सास, बोली अब ये ही मेरा पति, किए कई खुलासे

नई दिल्ली(आरएनएस)। बेटी की शादी से दस दिन पहले होने वाले दामाद के साथ भागी सास ने आखिरकार सरेंडर कर दिया है। पुलिस ने दोनों के गिरफ्तार कर लिया है।दामाद के साथ पुलिस के शिकंजे में आई सास थाने में फूट-फूटकर रोने लगी। उसने रोते हुए कई खुलासे किए। सास ने पुलिस को बताया कि उसे क्यों दामाद के ही साथ भागने पर मजबूर होना पड़ा। सास ने यह भी कहा कि वह दामाद से प्यार करती हूं और उसी के साथ अब रहना है। वहीं, दामाद ने बताया कि घर से भागने के बाद पिछले दस दिनों में दोनों कहां-कहां रहे और किस तरह से पुलिस से छिपते रहे। पुलिस ने दोनों को नेपाल बार्डर से गिरफ्तार करने का दावा किया है।

छत्तीसगढ़ में सुबह-सुबह एनकाउंटर, सुरक्षाबलों ने मार गिराए 13 लाख के इनामी दो नक्सली

रायपुर(आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले में सुरक्षाबलों को एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। बुधवार को जारी जानकारी के अनुसार, जिले में हुई एक मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने दो नक्सलियों को मार गिराया है। मारे गए दोनों नक्सलियों पर कुल 13 लाख रुपये का इनाम घोषित था। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह मुठभेड़ जिले के किलम-बरगुम क्षेत्र के जंगल में हुई। इस कार्रवाई में पूर्वी बस्तर डिवीजन के डिविजनल कमेटी सदस्य हलदर और एरिया कमेटी सदस्य रामे को सुरक्षाबलों ने ढेर कर दिया। अधिकारियों के अनुसार, मारे गए नक्सली हलदर पर 8 लाख रुपये और रामे पर 5 लाख रुपये का इनाम घोषित था। उन्होंने बताया कि कोंडागांव और नारायणपुर जिले की सीमा पर स्थित किलम-बरगुम क्षेत्र के जंगलों में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर कोंडागांव जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और बस्तर फाइटर्स के दल को मंगलवार को नक्सल विरोधी अभियान पर रवाना किया गया था।पुलिस अधिकारियों ने जानकारी दी कि अभियान के दौरान मंगलवार देर शाम सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई। इस मुठभेड़ में अब तक दो नक्सलियों के शव बरामद किए गए हैं। घटनास्थल से एक एके-47 राइफल, अन्य हथियार, विस्फोटक सामग्री और नक्सलियों से संबंधित अन्य सामान भी बरामद हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि इलाके में नक्सलियों के खिलाफ अभियान अभी जारी है।उधर, एक अन्य घटनाक्रम में मंगलवार को मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में पांच लाख रुपये के इनामी एक नक्सली ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि 34 वर्षीय रूपेश मंडावी उर्फ सुखदेव ने पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण किया।

धार्मिक स्थल को लेकर उड़ी अफवाह के बाद बवाल, भीड़ ने पुलिस और निगम टीम पर बरसाए पत्थर; 31 पुलिसकर्मी घायल

नासिक(आरएनएस)। नासिक के काठे गली इलाके में मंगलवार रात पुलिस पर पथराव किया गया। यह घटना तब हुई जब क्षेत्र में बिजली कट गई और इसी अंधेरे का फायदा उठाकर भीड़ ने अचानक पुलिस, नगर निगम कर्मी और आसपास खड़े वाहनों पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। इस हिंसक घटनाक्रम में 31 पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि पांच वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गए हैं। हंगामे की वजह एक धार्मिक स्थल को लेकर उड़ी अफवाह बताई जा रही है।

स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए पुलिस को तत्काल कार्रवाई करनी पड़ी। रात में करीब 500 पुलिसकर्मियों को मौके पर तैनात किया गया ताकि हालात और न बिगड़ें। बताया जा रहा है कि हंगामे के समय करीब 400 से 500 लोग मौजूद थे। पुलिस ने किसी भी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए इलाके में ट्रैफिक मार्गों में बदलाव भी कर दिए हैं। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों ने मिलकर हालात पर कड़ी नजर रखी और रात भर गश्त जारी रही।

सूत्रों ने बताया कि इस पूरे मामले की जड़ एक विवादास्पद धार्मिक स्थल है, जिस पर पिछले कुछ दिनों से तनाव की स्थिति बनी हुई थी। नगरपालिका ने 1 अप्रैल को अदालत के आदेश के बाद एक अनधिकृत निर्माण पर नोटिस दिया था, जिसमें कहा गया था कि यदि निर्माण को स्वयं नहीं हटाया गया तो प्रशासन उचित कार्रवाई करेगा। इस चेतावनी के बावजूद धार्मिक स्थल को नहीं हटाया गया, जिससे स्थानीय लोगों में असंतोष और तमाम तरह की अफवाह फैल गई।

जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई होंगे अगले सीजेआई, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की लेंगे जगह

नई दिल्ली(आरएनएस)। वर्तमान मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) संजीव खन्ना ने बुधवार को केंद्रीय कानून मंत्रालय को न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई को अगला सीजेआई नियुक्त करने की सिफारिश भेजी है। न्यायमूर्ति गवई वर्तमान सीजेआई के बाद उच्चतम न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश हैं और वह आगामी 14 मई को देश के 52वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में शपथ लेंगे। सीजेआई खन्ना 13 मई को सेवानिवृत्त होने वाले हैं।राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जस्टिस गवई को पद की शपथ दिलाएंगी। न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ के 65 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने के बाद न्यायमूर्ति खन्ना ने नवंबर 2024 में मुख्य न्यायाधीश का पदभार संभाला था।जस्टिस गवई का पूरा नाम भूषण रामकृष्ण गवई है और उनका जन्म 24 नवंबर, 1960 को महाराष्ट्र के अमरावती में हुआ था। उन्होंने 12 नवंबर, 2005 को उच्च न्यायालय के स्थायी न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति प्राप्त की थी। तब से वह शीर्ष अदालत की कई महत्वपूर्ण संविधान पीठों का हिस्सा रहे हैं।

राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में आधी आबादी की पूरी भूमिका हो : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

दहेज, मृत्युभोज से बचें, अपने बच्चों को पढ़ायें-लिखायें और समर्थ बनाएं

भोपाल (ए.)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि माताओं, बहनों और बेटियों के हित में हमारी सरकार हमेशा उनके साथ हैं। इनके लिए सरकार कोई कसर नहीं रखेगी। बहनों को हमारी सरकार उनका हर वाजिब हक दिलायेगी। राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में आधी आबादी की पूरी भूमिका हो, इसे बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। देश की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़े, इसके लिए आगामी वर्षों में लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण का लाभ मिलेगा। मध्यप्रदेश सरकार पहले ही निकाय चुनावों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू कर चुकी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को मंडला जिले के टिकरवारा गांव में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहाँ आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में प्रदेश की लाड़ली बहनों सहित अन्य योजनाओं के हितग्राहियों को सिंगल क्लिक के जरिए 2500 करोड़ से अधिक की सम्मान एवं सहायता राशि अंतरित की। उन्होंने भारतीय महिला क्रिकेट टीम में चयनित होने के लिए सुश्री शुचि

उपाध्याय का मंच से अभिनंदन भी किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न योजनाओं में हितलाभ और युवाओं को नियुक्ति-पत्र भी वितरित किये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा प्रदेश की 1.27 करोड़ बहनों को 1552.38 करोड़ रुपए, 56.68 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को 340 करोड़ रुपए, प्रधानमंत्री उज्ज्वला गैस योजना में पात्र 25 लाख बहनों को 450 रुपए में सिलेंडर रिफिलिंग के लिए 57 करोड़ रुपए की राशि अंतरित की गई। सरकार द्वारा अब तक लाड़ली बहनों को 36 हजार 500 करोड़ रुपए से अधिक की सम्मान राशि प्रदान की जा चुकी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंडला के विकास को गति देने के लिए 232 करोड़ रुपए की लागत वाले 66 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन किया। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके की मांग पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंडला जिले में सुरखी-इंद्री मार्ग पर 16 करोड़ 61 लाख रुपए की लागत से नया पुल बनाने और बंजर नदी में नवनिर्मित एक अन्य पुल का लोकार्पण कर इसका नामकरण अमर शहीद शंकर शाह रघुनाथ शाह सेतु करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंडला के विकास में सरकार कोई भी कमी नहीं छोड़ेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना के अंतर्गत सामूहिक विवाह समारोह में परिणय-सूत्र में बंधे 1100 से अधिक नवविवाहित दंपत्तियों पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि आज नवविवाहित दंपत्तियों को 49-49 हजार की राशि प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 16 संस्कारों में विवाह सबसे बड़ा होता है।

दूसरी बस के ओवरटेक से बचने के प्रयास में डिवाइडर पर चढ़कर पलटी कर्मचारियो से भरी बस

- बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के सामने हुआ हादसा

-15 घायल, चार गंभीर, एक की हालत चिंताजनक

भोपाल(ए)। राजधानी के नजदीक बागसेवनिया थाना इलाके में भोपाल-नर्मदापुरम रोड पर बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के सामने बुधवार दोपहर बड़ा हादसा हो गया। यहॉ सोम डिस्टिलरीज के कर्मचारियो को ले जा रही बस डिवाइडर से टकराकर पलट गई। एक्सीडेंट में बस में सवार ड्राइवर-कंडक्टर सहित सोम डिस्टिलरीज के करीब 15 कर्मचारी घायल हो गए। इनमें चार की हालत गंभीर और एक की

हालत चितांजन बताई जा रही है। पुलिस के अनुसार बीयू के सामने एक बस अचानक अनयित्रिंत होकर डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। बताया गया है कि बस कर्मचारियों को लेकर मंडीदीप की ओर जा रही थी। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस टीम ने मौके पर मौजूद लोगो के साथ मिलकर घायलों को इलाज के लिये नजदीक ही स्थित निजी अस्पताल पहुंचाया। हादसे में बस चालक हेमंत के साथ ही मनोज यादव और अनिल मीणा नामक व्यक्ति गंभीर रुप से घायल हुए है, जिनकी हालत चिंताजनक है। वहीं वीडी शुक्ला नाम के एक व्यक्ति की हालत नाजूक बताई जा रही है। लोगो का कहना है की हादसे का शिकार हुई बस सोम डिस्टिलरीज के कर्मचारियों को लेकर जा रही थी। उसी दौरान दूसरी बस ने ओवरटेक करने का प्रयास करते हुए दूसरी बस के काफी नजदीक आ गई। बचाने के प्रयास में बस डिवाइडर पर जा चढ़ी और अनियंत्रित होकर पलट गई। पुलिस हादसे की जॉच कर रही है, जिसके बाद आगे की कार्यवाही की जायेगी।

बैरसिया के खेजड़ा घाट, हथाईखेड़ा डेम और वन विहार तालाब में चला श्रमदान और सफाई अभियान

भोपाल (आरएनएस)। जल गंगा संवर्धन अभियान- 2025 के अंतर्गत भोपाल जिले में जल स्त्रोतों की स्वच्छता और संरक्षण के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों पर जन-सहभागिता आधारित गतिविधियाँ संचालित की गईं। जिला प्रशासन और मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में बैरसिया स्थित खेजड़ा घाट की बाह्य नदी में छात्रों द्वारा साफ-सफाई के साथ बोरी बंधान का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त, हथाईखेड़ा डेम में भी सफाई कार्य संपन्न हुआ। इसी क्रम में वन विहार के समीप स्थित छोटे तालाब में नगर निगम भोपाल के सहयोग से पानी की सतह पर उगी हुई घास को हटाकर तालाब की सफाई की गई। इस श्रमदान कार्यक्रम में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के छात्र, जन अभियान परिषद के जिला एवं विकासखंड समन्वयक तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई। कार्यक्रम का उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना और समुदाय को जल स्त्रोतों की स्वच्छता एवं सतत विकास के लिए प्रेरित करना है। इस दिशा में स्कूल शिक्षा विभाग, भोपाल द्वारा भी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं, जिनमें निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर-बैनर और चित्रकला प्रतियोगिता के माध्यम से स्कूली छात्रों को जल संरक्षण का संदेश देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

गिद्ध संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन सेंटर केरवा भोपाल के 6 केप्टिव ब्रीडिंग गिद्धों को छोड़ा गया प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वन क्षेत्र में

भोपाल (ए.)। वन विभाग द्वारा गिद्ध संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गयी है। लुप्तप्राय गिद्ध प्रजातियों को बचाने और उनके संरक्षण के लिये गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन सेंटर केरवा भोपाल के 6 केप्टिव ब्रीडिंग गिद्धों को प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वन क्षेत्र में छोड़ा गया। इनमें 2 सफेद पीठ वाले गिद्ध एवं 4 लम्बी चोंच वाले गिद्धों को मुक्त किया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव शुभरंजन सेन ने बताया कि मुक्त किये गये सभी गिद्धों पर ऑर्निट्रैक-25 सौर ऊर्जा चलित जीपीएस-जीएसएम ट्रैकर लगाये गये हैं। इसके माध्यम से उनके आवागमन के पैटर्न और आवास उपयोग की निगरानी की जा रही है। श्री सेन ने बताया कि डायरेक्टर टेक फॉर कंजर्वेशन जी. अरेन्द्रन, विश्व प्रकृति निधि भारत द्वारा गिद्धों को ऑर्निट्रैक-25 सौर ऊर्जा चलित जीपीएस-जीएसएम ट्रैकर लगाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री सेन ने कहा कि हलाली डेम के आसपास की बस्तियों में टैग किये गये गिद्धों की सुरक्षा एवं जागरूकता के लिये पर्चे बाँटे गये हैं। इनमें आम लोगों से अपील की गयी है कि अगर गिद्ध घायल होते हैं या उन्हें कोई नुकसान पहुँचता है, तो वे तत्काल वन विभाग को सूचित करें। गिद्धों के पहले समूह को प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वन क्षेत्र में छोड़ने के अवसर पर अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव एल. कृष्णमूर्ति, संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान श्री मीना अवधेश कुमार शिव कुमार, सहायक संचालक वन विहार संदेश माहेश्वरी, बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी मुम्बई के प्रतिनिधि, उप संचालक डॉ. सुजीत नरवड़े, डॉ. सरवन सिंह राठौर, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, डॉ. सेमसन, गिद्ध संरक्षण एवं प्रजनन केन्द्र केरवा भोपाल संजय परिहार, विश्व प्रकृति निधि भारत की प्रतिनिधि श्रीमती संगीता सक्सेना, अजय मिश्रा और रायसेन वन मण्डल के अधिकारी उपस्थित थे।

आयुष्मान आरोग्य शिविरों में 12 हजार से अधिक नागरिक लाभान्वित

भोपाल(आरएनएस)।भोपाल जिले के 130 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आरोग्य शिविर आयोजित किए गए। शहरी स्वास्थ्य संस्थाओं, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप स्वास्थ्य केंद्रों, मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक्स में आयोजित शिविरों में 12856 हितग्राही स्वास्थ्य विभाग द्वारा दी जा रही विभिन्न सेवाओं से लाभान्वित हुए। शिविरों में संचारी एवं असंचारी रोगों की स्क्रीनिंग, टीकाकरण, परिवार कल्याण सेवाएं, आयुष सेवाएं, टेली कंसल्टेशन, टीकाकरण बैलेंस गतिविधियां सहित विभिन्न स्वास्थ्य दी गईं। साथ ही नागरिकों को लू और अधिक तापमान से होने वाली बीमारियों के बचाव के बारे में जानकारी भी दी गई। शिविरों में के लिए 4781 की उच्च रक्तचाप एवं 4150 नागरिकों की मधुमेह स्क्रीनिंग की गई। 2908 लोगों की ओरल कैंसर,1552 की स्तन कैंसर एवं 913 की सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग की गई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का मंदसौर में सोमयज्ञ की आयोजन समिति ने अभिनंदन कर अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

भोपाल मंडल स्काउट एवं गाइड द्वारा निःशुल्क जल सेवा का शुभारंभ

गर्मी की तपिश में ठंडे जल की सौगात

भोपाल (निप्र)। मंडल रेल प्रबंधक देवाशीष त्रिपाठी के मार्गदर्शन में यात्रियों की सुविधा और सेवा भाव को ध्यान में रखते हुए, पश्चिम मध्य रेल भारत स्काउट एवं गाइड, भोपाल मंडल द्वारा आज दिनांक 16 अप्रैल 2025 को भोपाल एवं इटारसी स्टेशनों पर ग्रीष्मकालीन निःशुल्क जल सेवा का शुभारंभ किया गया। यह सेवा आगामी दो माह, अर्थात 15 जून 2025 तक संचालित की जाएगी, जिसमें कुल 50 स्काउट रोवर्स एवं लीडर्स अपनी सेवाएं देंगे। इस पुनीत पहल का शुभारंभ भोपाल स्टेशन पर स्टेशन प्रबंधक आर. के. मिश्रा, स्टेशन प्रबंधक (वाणिज्य), मंडल मुख्य टिकट निरीक्षक सुनील वर्गीश, एवं वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (कैरिज एंड वैगन) धर्मेश झा की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। स्काउट रोवर्स की यह टीम ट्रेनों में सवार यात्रियों को प्लेटफॉर्म पर ही ठंडा पेयजल उपलब्ध कराएगी, जिससे उन्हें चलती ट्रेन से उतरने की आवश्यकता नहीं होगी। रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु पहले से ही वॉटर कूलर एवं नलों के माध्यम से स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था की जा रही है, वहीं सेवा भाव से प्रेरित कई समाजसेवी संस्थाएं भी यात्रियों की प्यास बुझाने के इस

अभियान में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में भोपाल मंडल के 11 प्रमुख स्टेशनों — भोपाल, इटारसी, सांची, खिरकिया, हरदा, नर्मदापुरम, संत हिरदाराम नगर, विदिशा, गंजबासौदा, अशोकनगर एवं रूठियाई — पर कुल 11 गैर-सरकारी संगठन सक्रिय रूप से निःशुल्क जल सेवा में सहयोग कर रहे हैं। ये संस्थाएं न केवल यात्रियों को प्लेटफार्म पर पानी पिलाती हैं, बल्कि उनकी खाली बोतलों में ठंडा जल भरने का कार्य भी करती हैं। इस सेवा का मुख्य उद्देश्य यह है कि गर्मी की इस भीषण तपन में मंडल से गुजरने वाला कोई भी यात्री प्यासा न रहे। यात्रियों को यात्रा की थकान और मौसम की परेशानी से राहत मिले, यही इस सेवा का संकल्प है। मंडल रेल प्रशासन द्वारा इन संस्थाओं को स्टेशन परिसर में जल सेवा संचालन की अनुमति प्रदान की गई है। साथ ही, मंडल रेल प्रशासन ने अन्य सामाजिक संस्थाओं, एनजीओ व रोटरी क्लबों से भी इस सेवा कार्य में सहभागी बनने की अपील की है। मानव सेवा के इस शुभ प्रयास में रेलवे हर संभव सहयोग प्रदान करेगा।

दक्षिण दर्शन यात्रा के लिए भारत गौरव पर्यटक ट्रेन होगी रवाना

भोपाल मंडल के रानी कमलापति एवं इटारसी स्टेशनों से यात्रियों को मिलेगा विशेष लाभ

भोपाल (निप्र)। पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल मंडल यात्रियों की सुविधा और धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। इसी क्रम में इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईआरसीटीसी) द्वारा भारत गौरव पर्यटक ट्रेन के माध्यम से दक्षिण दर्शन यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यह विशेष ट्रेन दिनांक 09 जून 2025 को मध्यप्रदेश के इंदौर स्टेशन से रवाना होगी। यह ट्रेन इंदौर, उज्जैन, शुजालपुर, सीहोर, रानी कमलापति, इटारसी, बैतूल और नागपुर स्टेशनों से होकर गुजरेगी। इससे भोपाल मंडल के अंतर्गत आने वाले रानी कमलापति एवं इटारसी जैसे प्रमुख स्टेशनों के यात्रियों को इस यात्रा में आसानी से शामिल होने का अवसर मिलेगा। इससे भोपाल, होशंगाबाद, सीहोर, विदिशा तथा आसपास के जिलों के श्रद्धालु यात्रियों को बिना अतिरिक्त यात्रा किए सीधा बोर्डिंग की सुविधा प्राप्त होगी। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया कि 09 रातों और 10 दिनों की इस विशेष यात्रा के दौरान यात्रियों को तिरुपति, रामेश्वरम, मदुरई, कन्याकुमारी एवं त्रिवेंद्रम जैसे दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों के दर्शन कराए जाएंगे। यात्रा में धार्मिक स्थलों के दर्शन के साथ-साथ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के स्थलों

को देखने का अवसर भी मिलेगा। आईआरसीटीसी द्वारा यह यात्रा एक सर्वसमावेशी टूर पैकेज के रूप में प्रस्तुत की जा रही है, जिसमें विशेष एलएचबी कोचों में आरामदायक रेल यात्रा, ऑन-बोर्ड एवं ऑफ-बोर्ड शाकाहारी भोजन, वातानुकूलित बसों द्वारा स्थानीय भ्रमण, होटल में आवास, ऑन-बोर्ड सुरक्षा, सफाई व्यवस्था, टूर एस्कॉर्ट्स और यात्रा बीमा जैसी सुविधाएं शामिल हैं। इस यात्रा के लिए तीन अलग-अलग श्रेणियों में शुल्क निर्धारित किए गए हैं। स्लीपर श्रेणी (इकॉनॉमी क्लास) में यात्रा करने वाले यात्रियों को प्रति व्यक्ति 18,000 खर्च वहन करना होगा। वहीं यदि कोई यात्री थ्री एसी (स्टैंडर्ड क्लास) में यात्रा करना चाहता है तो उसके लिए प्रति व्यक्ति 29,500 का शुल्क निर्धारित किया गया है। टू एसी (कम्फर्ट क्लास) में यात्रा करने वाले यात्रियों को प्रति व्यक्ति 38,500 खर्च करना होगा। इन सभी शुल्कों में यात्रा से संबंधित सभी आवश्यक सुविधाएं शामिल हैं। इस यात्रा का लाभ उठाने के इच्छुक यात्री आईआरसीटीसी की वेबसाइट www.irctctourism.com पर ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं या आईआरसीटीसी के अधिकृत एजेंटों से संपर्क कर आरक्षण करा सकते हैं। बुकिंग शीघ्र कराने पर सीट की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी। भोपाल मंडल के यात्रियों के लिए यह एक सुनहरा अवसर है, जिसमें घर के पास के स्टेशन से सीधा तीर्थ यात्रा शुरू करने की सुविधा उपलब्ध है। भारत गौरव ट्रेन के माध्यम से इस तरह की सुविधाजनक एवं सुरक्षित यात्रा यात्रियों को एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करेगी।

विविध-समाचार

भारतीय रेल के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अनूठे डाक टिकटों की खास प्रदर्शनी

भोपाल (निप्र)। पश्चिम मध्य रेल महाप्रबंधक कार्यालय में प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी प्रभात के मार्गदर्शन में भारतीय रेल के स्थापना दिवस के अवसर पर अनूठे डाक टिकटों की एक खास प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में डाक टिकट संग्रहकर्ता अरविन्द मलिक द्वारा सन् 1853 से अभी तक के भारतीय रेल से संबंधित डाक टिकटों की प्रदर्शनी लगाई गई। यह आयोजन मुख्य कार्मिक अधिकारी (प्रशासन) एस डी पाटीदार के निर्देशन एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी (आईआर) अजय कुमार दीक्षित के संरक्षण में किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (मुख्यालय) द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में भारतीय रेल द्वारा अर्जित विशेष उपलब्धियों के अवसर पर जारी डाक टिकटों का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। इनमें पहली यात्री रेल, विद्युत कर्षण के 75 गौरवपूर्ण वर्ष, भारतीय रेल के 150 वर्ष पूर्ण होने पर जारी डाक टिकट प्रमुख रूप से शामिल हैं। इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अवलोकन किया। कार्यक्रम में उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (आईआर) संजय कुमार, सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण) अभय कुमार गुप्ता एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

निगम के अतिक्रमण निरोधक दस्ते ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों से हटाए अतिक्रमण

भोपाल,(आरएनएस)। नगर निगम द्वारा सड़कों, फुटपाथों, कॉरीडोर व सार्वजनिक स्थलों आदि से अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही निरंतर की जा रही है। इसी तारतम्य में निगम के अतिक्रमण निरोधक दस्ते ने सीएम हेल्पलाईन व अन्य माध्यमों से प्राप्त शिकायतों के निवारण तथा निगम की नियमित कार्यवाही के तहत शहर के अनेक क्षेत्रों से अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही करते हुए ठेले, गुमठी, पान पार्लर, काउंटर, स्टैण्ड बोर्ड, रैक आदि जप्त किए साथ ही भवन अनुज्ञा शाखा को सहयोग देकर अवधपुरी प्रगति नगर क्षेत्र में अवैध रूप से बनीं 04 दुकानों को भी तोड़ने की कार्यवाही की। निगम आयुक्त हरेन्द्र नारायन के निर्देश पर निगम के अतिक्रमण निरोधक दस्ते के दलों ने बुधवार को डीआईजी बंगला चौराहा, ईदगाह हिल्स, वाजपेयी नगर, न्यू मार्केट नो व्हीकल जोन, सूरज नगर, भदभदा, बड़वई, करोद, बुधवारा, कसाईपुरा, ज्योति टॉकीज, अवधपुरी, प्रगति नगर, व्हीआईपी गेस्ट हाउस, लिंक रोड नं. 01, 02 एवं 03, अशोका गार्डन, 80 फिट रोड, सब्जी मंडी परिहार चौराहा, कोलार क्षेत्र के फाईन एवेन्यू, बीमाकुंज, कोलार थाना, संस्कार गार्डन, मिसरोद, अलकापुरी, भानपुर, रेतघाट, दानापानी रोड, ईश्वर नगर, अरेरा हिल्स, एम.पी.नगर आदि क्षेत्रों में सड़कों, फुटपाथों व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर अवैध रूप रखे ठेले, गुमठियां, गन्ने की चरखी, झुग्गी, काउंटर आदि के अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही करते हुए 04 काउंटर, 01 स्टैण्ड बोर्ड, 02 रैक, 02 कूलर स्टैण्ड, 04 गुमठी, 03 टेबिल, 05 बैंच, 01 पान पार्लर आदि जप्त किए।

अनुसूचित जाति वर्ग स्वरोजगार स्थापित करने शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का ले लाभ

भोपाल (आरएनएस)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति मर्यादित भोपाल ने बताया कि अनुसूचित जाति वर्ग को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए संत रविदास स्वरोजगार योजना, डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण योजना एवं सावित्री बाई फुले स्वः सहायता समूह योजनाएं संचालित की जा रही है। संत रविदास स्वरोजगार योजना में उद्योग स्थापित करने के लिए एक लाख से 50 लाख रूपए तक, एक लाख से 25 लाख रूपए तक सेवा इकाई एवं खुदरा व्यवसाय के लिए 18 से 45 वर्ष आयु एवं न्यूनतम कक्षा 8वीं उत्तीर्ण, परिवार की वार्षिक आय 12 लाख से अधिक नहीं होना चाहिए, बैंक से प्राप्त ऋण पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज अनुदान अधिकतम 7 वर्षों तक दिया जाएगा। आवेदन www.samast.mponline.gov.in पोर्टल पर एमपी ऑनलाइन के माध्यम से कर सकते है। डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण योजना में स्वरोजगार स्थापित करने के लिए 10 हजार से एक लाख रूपए तक का ऋण दिया जाएगा। आयु 18 से 55 वर्ष के मध्य होना चाहिए, शिक्षा का बंधन नहीं है। बैंक से प्राप्त ऋण पर 7 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज अनुदान अधिकतम 5 वर्षों तक दिया जाएगा।

भाजपा द्वारा ईडी का दुरुपयोग राजनैतिक एजेंडा, देश में अघोषित आपालकाल का संकेत : जीतू पटवारी

भोपाल (ए.)। ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) द्वारा नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर अभा कांग्रेस की पूर्व अध्यक्षा, त्याग की प्रतिमूर्ति श्रीमती सोनिया गांधी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ कोर्ट में चार्ज शीट दायर किये जाने के विरोध में आज देश भर में कांग्रेस पार्टी ने भाजपा सरकार और ईडी के खिलाफ प्रदर्शन कर विरोध दर्ज कराया। वहीं अभा कांग्रेस के निर्देश पर मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी के निर्देश पर सभी जिलों में जिला मुख्यालयों व बड़े सरकारी दफ्तरों पर कांग्रेस ने ईडी द्वारा नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर की गई कार्यवाही के विरोध में प्रदर्शन कर मोदी सरकार को घेरा। श्री पटवारी ने इस मामले को लेकर मीडिया से चर्चा कर मोदी सरकार पर जमकर हमला बोला।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के नेतृत्व में बुधवार को भोपाल जिला शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना और ग्रामीण अध्यक्ष अनोखी मानसिंह पटेल के तत्वावधान में ईडी द्वारा नेशनल हेराल्ड मामले पर चार्ज शीट दायर किये जाने पर मोदी सरकार की तानाशाही, भाजपा सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर भाजपा की कुत्सित मानसिकता के खिलाफ विरोध दर्ज कराया गया। विरोध प्रदर्शन में बड़ी संख्या में कांग्रेसजनों ने हाथों में तखतियां लेकर ईडी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।श्री पटवारी ने कहा कि भाजपा नेशनल हेराल्ड को लेकर पिछले 5 साल से माहौल बना रही है और विपक्ष को दबाने की साजिश रच रही है। विपक्ष के 36 चुनिंदा नेताओं पर ईडी का दुरूपयोग किया गया, किसी पर दोष साबित नहीं हुआ, लेकिन 70 फीसदी नेताओं ने भाजपा ज्वाइन कर ली। श्रीमती सोनिया गांधी जी ने एक रूपया भी किसी से नहीं लिया, उन्होंने प्रधानमंत्री पद तक का त्याग किया और ऐसी त्याग की प्रतिमूर्ति श्रीमती सोनिया गांधी जी और माननीय राहुल गांधी जी पर इस तरह का कृत्य देश की जनता पर खतरा है।

शिकायत अटेण्ड किए बगैर आगे बढ़ी तो संबंधित अधिकारी का कटेगा वेतन : कलेक्टर श्रीमती चौहान

सीएम हैल्पलाइन की शिकायतों की हुई समीक्षा

ग्वालियर (ए.)। सहायक आयुक्त जनजाति कल्याण विभाग के खिलाफ कार्रवाई के लिये भेजा प्रस्ताव कोई भी शिकायत अटेण्ड किए बगैर आगे न बढ़े, संतुष्टिपूर्ण निराकरण हो और 50 दिन से अधिक पुरानी शिकायतों का निराकरण समयबद्ध कार्यक्रम के तहत करें। इस आशय के निर्देश कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने सीएम हैल्पलाइन पोर्टल पर आईं शिकायतों की समीक्षा के दौरान विभागीय अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि अगर कोई शिकायत एल-1 स्तर पर अटेण्ड नहीं की गई तो संबंधित अधिकारी का सात दिन का वेतन काटा जायेगा। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने जनजाति कल्याण विभाग की शिकायतों के निराकरण की स्थिति ठीक न पाए जाने पर नाराजगी जताई। उन्होंने सहायक आयुक्त जनजाति कल्याण विभाग के खिलाफ कार्रवाई के लिये संभाग आयुक्त को प्रस्ताव भेजा है। साथ ही वेतन रोकने के निर्देश भी दिए हैं। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्गों की सहायतार्थ संचालित संकटापन्न योजना का लाभ जरूरतमंद लोगों को तत्परता से दिलाया जाए। साथ ही आवास भत्ता का लाभ पात्र विद्यार्थियों को समय-सीमा के भीतर दिलाना सुनिश्चित करें। सीएम हैल्पलाइन की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्रीमती चौहान ने फसल बीमा संबंधी शिकायत के निराकरण में उदासीनता सामने आने पर भितरवार के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी को वेतन काटने का कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश उप संचालक कृषि को दिए। साथ ही निर्देश दिए कि जिन अधिकारियों द्वारा सीएम हैल्पलाइन की शिकायतें समय-सीमा के भीतर अटेण्ड नहीं की जा रही हैं, उनको विधिवत नोटिस जारी करें और सही जवाब न होने पर 7 - 7 दिवस का वेतन काटें। बैठक में खासतौर पर उन विभागों की सीएम हैल्पलाइन के निराकरण की समीक्षा की गई, जो शिकायतों के निराकरण के लिहाज से निचले ग्रेड पर हैं। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने शिकायतों के निराकरण के लिये समय-सीमा निर्धारित की है। साथ ही निर्देश दिए हैं कि शिकायतों का निराकरण संतुष्टि के साथ कराया जाए। बुधवार की शाम कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित हुई बैठक में अपर जिला दण्डाधिकारी टी एन सिंह व संयुक्त कलेक्टर संजीव जैन सहित जिले के एसडीएम व विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

आप ने मनाई बाबा साहेब की जयंती

नीमच (आरएनएस)। आज संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर जी का जन्मोत्सव आम आदमी पार्टी ने अम्बेडकर सर्कल पर स्थित बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मनाई / इस अवसर पर आम आदमी पार्टी ने प्रादेशिक नेतृत्व के निर्देश पर पर संविधान की उद्देशिका का वाचन कर संविधान की रक्षा का संकल्प लिया। आप के प्रदेश प्रवक्ता इंजी नवीन कुमार अग्रवाल ने बाबा साहेब की जयंती पर कहा की एक और बाबा साहेब ने विभिन्नता वाले देश में जहां पग पग पर भाषा ,संस्कृति, रीति रिवाज, मजहब, जात पात अलग अलग है ऐसे विभिन्नता वाले देश में संविधान निर्माण का अद्वितीय कार्य बाबा साहेब ने किया है जो वंदनीय है लेकिन वर्तमान समय में तानाशाही सरकार द्वारा खुलेआम संविधान के विपरीत अनेक कार्य किये जा रहे है।

विश्व धरोहर दिवस पर राज्य संरक्षित संग्रहालय व स्मारक दर्शकों के लिये निःशुल्क रहेंगे

ग्वालियर (ए.)। विश्व धरोहर दिवस 18 अप्रैल को दर्शकगण राज्य संरक्षित स्मारक निःशुल्क देख सकेंगे। संचालनालय पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय द्वारा इस आशय का आदेश जारी किया गया है। उप संचालक पुरातत्व एवं अभिलेखागार ग्वालियर पीसी महोबिया ने बताया कि विश्व धरोहर दिवस पर ग्वालियर शहर में राज्य संरक्षित स्मारक एवं संग्रहालय मोतीमहल, गूजरी महल और किला स्थित संग्रहालय में प्रवेश नि-शुल्क रहेगा। ग्वालियरवासी विश्व धरोहर दिवस पर शहर के संग्रहालयों में स्थित पुरातत्व धरोहरों को देख सकेंगे।

बेशकीमती सरकारी जमीन अतिक्रमण मुक्त कराई और रास्ता खुलवाया

ग्वालियर (ए.)। नयागाँव क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग के समीप स्थित लगभग साढ़े तीन बीघा बेशकीमती सरकारी जमीन अतिक्रमण मुक्त कराई गई है। उच्च न्यायालय द्वारा रास्ता खुलवाने के संबंध में पारित आदेश के पालन में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर बुधवार को राजस्व विभाग की टीम पुलिस के साथ मौके पर पहुँची और मशीनों के सहयोग से सरकारी जमीन से बेजा कब्जे हटवाए। अतिक्रमण मुक्त कराई गई जमीन की कीमत लगभग 4 करोड़ रूपए आंकी गई है। इस कार्रवाई से सरकारी जमीन अतिक्रमण मुक्त होने के साथ-साथ याचिकाकर्ता के लिये अपनी जमीन तक जाने का रास्ता भी खुल गया है। तहसीलदर घाटीगाँव अनिल कुमार नरवरिया ने बताया कि नयागाँव के सर्वे क्र.-199, 241, 239, 197 व 198 में स्थित सरकारी जमीन से बेजा कब्जा हटाने के लिये विधिवत बेदखली आदेश पारित किया गया। निर्धारित समय-सीमा में जब अनावेदकों द्वारा कब्जे नहीं हटाए गए तब राजस्व विभाग की संयुक्त टीम द्वारा शुक्रवार को बेदखली की कार्रवाई की गई। श्री नरवरिया ने बताया कि सतेन्द्र तिवारी द्वारा माननीय उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ग्वालियर में याचिका लगाई गई थी। जिसमें इस क्षेत्र के निवासी सतेन्द्र तिवारी द्वारा उनकी जमीन की ओर जाने वाले रास्ते को खुलवाने का आग्रह किया गया था। उच्च न्यायालय द्वारा इस याचिका में दिए गए निर्णय के पालन में राजस्व विभाग द्वारा यह कार्रवाई की गई है, इससे सरकारी जमीन अतिक्रमण मुक्त होने के साथ-साथ सतेन्द्र तिवारी के लिये अपनी जमीन तक जाने का रास्ता भी खुल गया है।

किसान भाई उर्वरकों का अग्रिम भण्डारण करें

रतलाम, (आरएनएस)। प्रदेश शासन द्वारा किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्रालय द्वारा अग्रिम भण्डारण की योजना लागू की गई है। उक्त योजना 31 मई तक लागू रहेगी। किसान भाई आवश्यकतानुसार रासायनिक उर्वरकों का अग्रिमण भण्डारण करें। उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास श्रीमती नीलमसिंह चौहान ने बताया कि वर्तमान में यूरिया 6294, डीएपी 1492, पोटाश 1257 तथा काम्पलेक्स 6425 मैट्रिक टन रासायनक खाद का मात्र जिले में भण्डारण है। खरीफवर्ष 2025 में किसानों को रासायनिक उर्वरकों की अत्यधिक आवश्यकता होगी। किसान भाई योजना का लाभ लेते हुए अग्रिम भण्डारण कर लें, ताकि किसी भी परेशानी का सामना न करना पडे।

एक प्रभारी प्रधानाध्यापक एवं दो शिक्षकों को किया बहाल

दतिया (ए.)। पदेन अपर संचालक लोक शिक्षण एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षय कुमार तेम्रवाल ने वितग दिवस जिला दतिया के बसई के विभिन्न माध्यमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालयों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान प्रभारी प्रधानाध्यापक एवं दो प्राथमिक शिक्षक बिना सूचना के अनुपस्थित पाए जाने के कारण संबधित को कार्यालयीन आदेशानुसार निलंबित किया गया था। परीक्षण उपरांत संबधितों के द्वारा प्रस्तुत अभ्यावेदन का परीक्षण किया गया। परीक्षण उपरांत शासकीय कन्या मा. विद्यालय बसई के प्रभारी प्रधानाध्यापक लव कुमार योगी, प्राथमिक शिक्षक श्रीमती कुसुम साहू, शासकीय मा. कन्या विद्यालय बसई प्राथमिक शिक्षक श्रीमती किरण गुप्ता का एक-एक दिवस का वेतन काटते हुए यथावत बहाल किया गया है। निलंबन अवधि सभी प्रयोजनों के लिए मान्य होगी।

बंधुआ श्रम जिला स्तरीय सतर्कता समिति एवं बाल श्रम से संबंधित जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक आयोजित

झाबुआ (ए.)। कलेक्टर नेहा मीना की अध्यक्षता में बंधुआ मजदूर प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 के अंतर्गत श्रमिकों के पहचान, सत्यापन विमुक्ति और पुनर्वासन हेतु गठित जिला स्तरीय निगरानी समिति एवं बाल श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 तथा बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) 2016 के प्रावधानों के तहत जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में श्रम निरीक्षक श्री संजय बघेल द्वारा बंधुआ मजदुर एवं बाल श्रमिक से जुड़े विभिन्न प्रावधानों की जानकारी दी गई। बैठक में सतर्कता समिति के बंधुआ मजदूरो के सम्बन्ध में जिम्मेदारियों से अवगत करा कर बताया कि बंधुआ मजदूरों के बचाने के लिए अपनायी जाने वाली प्रक्रिया के सम्बन्ध में विस्तार से बताया गया। बैठक में बाल एवं किशोर श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधि. 1986 एवं संशोधन 2016 के प्रावधानों के तहत अवगत कराया गया कि जिले में पिछले वित्तीय वर्ष में 92 निरीक्षण किये जाकर 6 बाल श्रमिको को रेस्क्यू किया गया एवं 05 उल्लंघनकर्ता संस्थानों के विरुद्ध सीजेएम (ष्टछ्रू) न्यायालय मे अभियोजन दायर किया गया है।

जलगंगा संवर्धन अभियान के तहत स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया

दतिया (ए.)। जल गंगा संवर्धन 2025 अभियान अंतर्गत मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद उन्नाव युवा मंडल नवांकुर संस्था द्वारा उनाव बालाजी धाम तीर्थस्थान की नदी पर दिनेश शर्मा, जिला समन्वयक मुनेंद्र शेजवार, विकास खण्ड समन्वयक श्रीमती ज्योति गोस्वामी जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत स्वच्छता कार्यक्रम किया। जल संरक्षण की शपथ सभी लोगों को दिलवाई गई। उसके पश्चात वहां पर बहुत सारी जलकुंभी एवं गंदगी को कार्यकर्ताओं द्वारा हटाकर नदी को स्वच्छ किया गया और सभी को संदेश दिया गया कि हर व्यक्ति अपने गांव और पंचायत में कुआ, बावड़ी, हेड पंप तालाब, तलैया, आदि प्राचीन जल स्रोतों को सफाई करें एवं लोगों को उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जन जागरण के कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में करे। इस अवसर पर प्रस्फुटन समितिया नवांकुर संस्थाएं, मेंटर्स एवं सामाजिक कार्यकर्ता राजीव शर्मा द्वारा कार्यक्रम का पूर्ण संचालन किया गया। जिसमें सरपंच श्रीमती किरण वर्मा डालचंद वर्मा, सचिन, रामसेवक यादव, पटवारी अरविंद दांगी मेंटर्स में राम प्रसाद कोहली बृजेंद्र महेंद्र श्रीमती मनोज गुप्ता अरविंद शर्मा, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

व्यापार समाचार

गुड न्यूज : अब चलती ट्रेन में भी यात्री निकाल सकेंगे पैसे, रेलवे ने शुरु की एटीएम सुविधा

नई दिल्ली (आरएनएस)। अक्सर लंबी दूरी की यात्रा के दौरान नकदी की कमी महसूस होती है। यात्रियों की इसी परेशानी को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेलवे ने एक अनूठी पहल की है।

अब ट्रेन में सफर करने वाले यात्री भी आसानी से,ञ्जरूसे पैसे निकाल सकेंगे। रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए चलती ट्रेन में,ञ्जरू सेवा शुरू करने की तैयारी कर ली है और फिलहाल इसका ट्रायल किया जा रहा है।रेलवे ने इस सुविधा को प्रायोगिक तौर पर नांदेड़ से छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस तक चलने वाली पंचवटी एक्सप्रेस में शुरू किया है। इस ट्रेन में एक एटीएम मशीन लगाई गई है, जिससे यात्री अपनी यात्रा के दौरान ही नकदी निकाल सकेंगे।यह नई सुविधा उन यात्रियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद साबित होगी जो ऑनलाइन भुगतान के बजाय नकद में लेनदेन करते हैं। साथ ही, उन लोगों को भी राहत मिलेगी जिन्हें ट्रेन में ऑनलाइन पेमेंट की सुविधा न होने या नकदी खत्म हो जाने के कारण असुविधा होती थी। अब उन्हें जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसे निकालने के लिए स्टेशन का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। रेलवे अधिकारी इस ट्रायल के दौरान यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि चलती ट्रेन में,ञ्जरू मशीन सुचारू रूप से काम करे। नेटवर्क कनेक्टिविटी, सुरक्षा, गोपनीयता, यात्रियों की सुविधा और अन्य आवश्यक पहलुओं पर बारीकी से ध्यान दिया जा रहा है।

ब्रिजस्टोन इंडिया ईवी-रेडी टायरों के साथ बाजार विस्तार की तैयारी में

नईदिल्ली (आरएनएस)। ब्रिजस्टोन इंडिया, यात्री और वाणिज्यिक वाहनों के लिए टायर निर्माता कंपनी, अपनी ट्यूरांज़ा i और ड्यूलर ऑल टेरेन (A/T) 002 टायर श्रृंखला का विस्तार करने के लिए तैयार है। कंपनी विभिन्न वाहनों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इन लोकप्रिय श्रेणियों में नए आकार पेश करेगी।

कंपनी के कार्यकारी निदेशक राजर्षि मोइत्रा के अनुसार, ट्यूरांज़ा 6i टायर एसयूवी, सीयूवी, सेडान और हैचबैक जैसे वाहनों के लिए डिज़ाइन किया गया है और वर्तमान में 14 से 20 इंच के आकार में उपलब्ध है। वहीं, ड्यूलर A/T 002 विशेष रूप से 4X4 वाहनों के लिए बनाया गया है।

मोइत्रा ने बताया कि कंपनी ने पिछले साल इन श्रेणियों में कुछ आकार लॉन्च किए थे और अब 2025 में मई से अक्टूबर के बीच कई नए विकल्प पेश किए जाएंगे। भारतीय टायर बाजार लगभग 4.4 करोड़ यूनिट का है, जिसमें ओईएम (ओरिजिनल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर) खंड में 2 करोड़ यूनिट और आफ्टरमार्केट खंड में 2.4 करोड़ यूनिट शामिल हैं। ब्रिजस्टोन इंडिया का आफ्टरमार्केट खंड में 20% बाजार हिस्सेदारी का दावा है और यह मारुति सुजुकी, हुंडई, टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसे प्रमुख कार निर्माताओं के साथ काम करती है।

अमेरिका से तनातनी बढ़ी : चीन ने बोइंग विमानों की डिलीवरी रोकी, एयरलाइनों को नए विमान न खरीदने के निर्देश

नई दिल्ली (आरएनएस)। अमेरिका और चीन के बीच गहराते व्यापारिक तनाव का असर अब विमानन उद्योग पर भी दिखने लगा है। चीन ने अमेरिकी विमान निर्माता कंपनी बोइंग से नए विमानों की डिलीवरी लेने पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। इसके साथ ही, चीनी सरकार ने अपनी सभी एयरलाइनों को स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे अब बोइंग से न तो कोई नया विमान खरीदें और न ही अमेरिका से विमानों से जुड़े उपकरण या कलपुर्जे मंगाएं।

यह कड़ा कदम अमेरिकी राष्टपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीनी आयातों पर 145 प्रतिशत तक का भारी टैरिफ लगाने के फैसले के बाद उठाया गया है। इस टैरिफ वॉर के जवाब में चीन ने भी अमेरिकी उत्पादों पर 125 प्रतिशत तक का जवाबी शुल्क लगाने की घोषणा की थी। इन नए शुल्कों के कारण अमेरिका से आने वाले विमानों और उनके पार्ट्स की लागत चीन में दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है, जिससे चीनी एयरलाइनों के लिए बोइंग विमान खरीदना और संचालित करना आर्थिक रूप से अव्यवहारिक हो गया है।ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, चीन अब उन एयरलाइनों की मदद करने के तरीके तलाश रहा है जिन्होंने पहले से बोइंग विमान लीज पर ले रखे हैं और अब बढ़ी हुई लागत का सामना कर रही हैं। चीन का यह फैसला बोइंग के लिए एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि चीन दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है। अनुमान है कि अगले 20 वर्षों में वैश्विक विमानों की कुल मांग का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा अकेले चीन से आएगा। साल 2018 में बोइंग ने जितने विमान बेचे थे, उनमें से करीब एक-चौथाई (25त्न) चीन को ही डिलीवर किए गए थे।

रुपया बढ़त के साथ बंद

मुंबई (ए)। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया 14 पैसे की बढ़त के साथ ही 85.63 पर बंद हुआ। इससे पहले आज सुबह रुपया 85.64 पर खुला। वहीं गत दिवस रुपया 33 पैसे की गिरावट के साथ ही 85.77 रुपये पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि विदेशी पूंजी की निकासी के बावजूद कमजोर अमेरिकी मुद्रा ने स्थानीय मुद्रा को बल दिया। उन्होंने रुपये की मजबूती का श्रेय अमेरिकी प्रशासन के भारत पर अतिरिक्त 26 फीसदी शुल्क को नौ जुलाई तक टालने को भी दिया।अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 85.85 प्रति डॉलर पर मजबूती के साथ खुला और शुरुआती कारोबार में 85.71 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव से 39 पैसे की बढ़त दिखाता है। रुपया शुक्रवार को 58 पैसे की जोरदार बढ़त के साथ ही 86.10 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। आंबेडकर जयंती के अवसर पर सोमवार को विदेशी मुद्रा बाजार बंद थे। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 फीसदी उछला लेकिन 100 से नीचे 99.46 पर ही रहा।

सोने ने लगाई छलांग 95 हजार पर पहुंचा, चांदी की चमक भी बरकरार

फिजिकल गोल्ड रखना सुरक्षित तरीका, अब लोग डिजिटल गोल्ड की तरह कर रहे मूव

नई दिल्ली, (ए)। बुधवार को सोने के भाव ने घरेलू वायदा बाजार में पहली बार 95,000 का आंकड़ा पार किया। यह अब तक का इसका सबसे ऊंचा भाव है। सोना 95,090 रुपए प्रति 10 ग्राम के नए टॉप पर पहुंच गया

और बाद में कुछ गिरावट के बाद 95,000 पर कारोबार हुआ। बुधवार दोपहर तक सोने की कीमत में 1.66 फीसदी की बढ़ोरती देखने को मिली। चांदी ने भी वायदा बाजार में अच्छी बढ़त दर्ज की, इसकी कीमतें 1.56 फीसदी बढ़कर एमसीएक्स पर 96,253 रुपए प्रति किलो हो गईं। इसने दिन के भीतर 96,344 रुपए प्रति किलो का उच्चतम स्तर भी छुआ।कीमतों में यह उछाल कमजोर डॉलर और ट्रंप के टैरिफ वॉर के बीच जारी अनिश्चितता के चलते आई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने की कीमतें गिरते डॉलर, व्यापार को लेकर बने तनाव और वैश्विक आर्थिक वृद्धि को लेकर चिंताओं से रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गईं। स्पॉट गोल्ड 1.7 फीसदी बढ़कर अंतरराष्ट्रीय बाजार में 3,282.88 डॉलर प्रति औंस पर पहुंचा, जो पहले 3,290.1 डॉलर प्रति औंस के नए उच्च स्तर पर था। अमेरिकी गोल्ड फ्यूचर्स 1.8 फीसदी बढ़कर 3,299.60 डॉलर पर पहुंच गया।डॉलर इंडेक्स अपने प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले 0.5 फीसदी गिर गया, जिससे अन्य करेंसी होल्डर्स के लिए सोना ज्यादा आकर्षक हो गया। पारंपरिक रूप से सोने को भू-राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितताओं के समय सुरक्षित निवेश माना जाता है और इस साल इसने कई रिकॉर्ड को छुआ, जिससे इसकी कीमत में 25 फीसदी से ज्यादा बढ़ी।

फास्ट टैग सिस्टम खत्म! 15 दिन बाद लागू हो रही नई पॉलिसी, सीधे बैंक खाते से कट जाएगा टोल

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश के टोल बूथ को लेकर सरकार जल्द ही एक बड़ा बदलाव करने वाली है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने घोषणा की है कि देश के राजमार्गों पर टोल भुगतान का तरीका बदलने जा रहा है। सरकार अगले 15 दिनों के भीतर एक नई टोल पॉलिसी पेश करने की तैयारी में है, जिसके मई से लागू होने की संभावना है। हालांकि, मंत्री ने इस नई नीति के बारे में विस्तृत जानकारी साझा नहीं की है, लेकिन उन्होंने संकेत दिया है कि इसके लागू होने के बाद टोल को लेकर किसी को भी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। इस नई प्रणाली के आने से मौजूदा फास्टटैग सिस्टम भी पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।

गडकरी ने स्पष्ट किया कि नई प्रणाली के तहत फिजिकल टोल बूथ की आवश्यकता नहीं होगी। इसके बजाय, सैटेलाइट आधारित ट्रैकिंग और वाहनों की नंबर प्लेट की पहचान तकनीक का उपयोग किया जाएगा। इसके माध्यम से टोल की राशि सीधे वाहन मालिकों के बैंक खातों से स्वचालित रूप से कट जाएगी।

क्या है नया GPS आधारित टोलिंग सिस्टम?

देश में सड़कों के बढ़ते जाल के साथ टोल बूथों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। सरकार अब इन टोल बूथों को समाप्त कर GPS आधारित टोलिंग प्रणाली को बढ़ावा देने जा रही है, जो वर्तमान FASTag सिस्टम की जगह लेगी। टोल बूथों के निर्माण से आधारभूत संरचना की लागत काफी बढ़ जाती है, जिससे टोल संग्रह की लागत में भी इजाफा होता है। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए सरकार यह नई टोलिंग प्रणाली लाने जा रही है।

इस नई प्रणाली में GPS तकनीक की मदद से सीधे वाहन चालक या मालिक के बैंक खाते से टोल की राशि काटी जाएगी। वाहनों की निगरानी GPS के माध्यम से की जाएगी और तय की गई दूरी और समय के आधार पर टोल की राशि की गणना की जाएगी। सरकार का मानना है कि यह नई प्रणाली टोल संग्रह को अधिक कुशल और पारदर्शी बनाएगी, साथ ही यात्रियों के लिए भी यह काफी सुविधाजनक साबित होगी।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, सत्य प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य

घिबली का ट्रेंड

घिबली एप से अपनी तस्वीरों को नया कलेवर देने के लिए लोग पागल हुए जा रहे हैं, बिना यह जाने-समझे कि इसका इस्तेमाल किस कदर खतरनाक है। आजकल आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) की मदद से अपनी तस्वीरों को स्टूडियो घिबली स्टाइल में बदलने का चलन आम जन को इस कदर अपनी आगोश में लिये हुए है कि इससे होने वाले नुकसान की चिंता किसी को रत्ती भर भी नहीं है। स्वाभाविक रूप से यह गोपनीयता के लिए गंभीर खतरा है। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों का भी यही मत है कि इसके इस्तेमाल में बेहद सतर्कता और समझदारी की जरूरत है। क्योंकि भले इस तरह के एप और एआई टूल्स सुरक्षित दिखें, मगर इनकी शत्रे और नियम बेहद अस्पष्ट होती हैं। एक बड़ा खतरा निजी तस्वीरों की चोरी और उसके गलत उपयोग का है।कई बार डीपफेक बनाने में कई सेलेब्रिटी की तस्वीरों का उपयोग किया गया है। कई बार तो फोटो या डाटा डार्क वेब को बेचे भी गए हैं। दरअसल, घिबली जापानी एनिमेशन की कला शैली स्टूडियो घिबली का ट्रेंड ओपन एआई के जीपीटी-40 मॉडल है, जिसमें तस्वीरों में महज आपका चेहरा ही नहीं बल्कि आपकी लोकेशन, वक्त और डिवाइस की जानकारी जैसा छिपा हुआ मेटाडाटा भी होता है और ये सभी निजी गोपनीय जानकारी आसानी से दे सकते हैं।हम भारतीयों में भेड़ चाल चलने की बुरी आदत घर कर चुकी है। कोई भी नई तकनीक का इस्तेमाल हम बिना उसके गुण-दोष के आधार पर नहीं करते हैं। साइबर युग में इस तरह की गलती के बेहद खतरनाक अंजाम भुगतने की आशंका बलवती होती है। पहले भी तस्वीरों का डीपफेक की मदद से कितना भद्दा और गंदा मजाक किया गया, यह बताने की जरूरत नहीं है। सरकार इन सब बातों से भिज्ञ है, मगर उसकी तरफ से कोई चेतावनी या निर्देश देने की पहल अब तक नहीं की गई है। होना तो यह चाहिए कि जनता को इसके बारे में सूचना और प्रसारण मंत्रालय को एक जागरूकता कैंपेन चलाना चाहिए।सोशल मीडिया के जरिये सरकारी संस्थाओं को इस तरह के एप्लीकेशन पर बराबर नजर रखने और जनता को लगातार सतर्क रहने की कवायद करते रहना होगा। छोटी सी खुशी के चक्कर में बड़ा और कभी न भूलने वाले कृत्य को लेकर जनता को भी सोचना होगा। सिर्फ भीड़ का हिस्सा बनने से बचने में ही आज के वक्त में भलाई है।

नये वक्फ कानून से दिक्कत किसे है

राधा रमण

राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद 8 अप्रैल को देशभर में वक्फ संशोधन कानून 2025 लागू हो गया है। केंद्र सरकार ने इसकी अधिसूचना जारी कर दी है। यह अधिसूचना भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दी गई है। वक्फ संशोधन विधेयक को पिछले सप्ताह संसद के दोनों सदनों से मंजूरी मिल गई थी। हालांकि इस कानून को कई मुस्लिम संगठनों और राजनेताओं ने अल्पसंख्यक हितों के खिलाफ बताते हुए कोर्ट में चुनौती दी है। देश के अलग-अलग भागों में इस कानून के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। खासकर कांग्रेस समेत देश के विपक्षी दल इसके विरोध को हवा दे रहे हैं। इस कानून के विरोध में याचिका दाखिल करनेवालों में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, ऑल इंडिया मजलिस-ए इत्तेहादुल मुसलमीन के अध्यक्ष सांसद असदुद्दीन ओवैसी, कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी, तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा, राष्ट्रीय जनता दल के सांसद मनोज झा और द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के प्रतिनिधि समेत 12 लोग शामिल हैं। उधर, केंद्र सरकार ने भी सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दाखिल कर मांग की है कि मामले की सुनवाई की पूर्व सूचना उसे भी दी जाए ताकि समय रहते वह भी अपना पक्ष रख सके। इस बीच, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने देशभर में 'वक्फ बचाव अभियान' शुरू कर दिया है। इसके तहत एक करोड़ लोगों का हस्ताक्षर कराकर प्रधानमंत्री को सौंपा जाएगा। यह अभियान 7 जुलाई तक चलेगा। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर इस कानून में क्या है जिससे मुस्लिम संगठनों और विपक्षी दलों का 'इस्लाम' खतरे में आ गया है।

दरअसल, विपक्ष और नये वक्फ कानून का विरोध करनेवालों का कहना है कि सारा विवाद वक्फ बोर्ड की सम्पत्तियों पर कब्जे को लेकर है। देशभर में वक्फ बोर्डों के पास 9.4 लाख एकड़ की जमीन है। इससे ज्यादा भूमि का स्वामित्व रेलवे और सशस्त्र बलों के पास है। वक्फ बोर्डों के पास यह सम्पत्तियां मुसलमानों द्वारा दान की गई हैं, जिन पर दरगाह, मस्जिद, कब्रिस्तान, मदरसा, दुकान आदि स्थापित हैं। इसके अलावा बहुतेरी कृषि भूमि भी है। इसकी देखरेख के लिए देश के हर राज्य में वक्फ बोर्ड गठित किया गया है। समय-समय पर इन वक्फ बोर्डों पर आर्थिक घपले के आरोप लगाये जाते रहे हैं लेकिन चूंकि वक्फ मामलों की सुनवाई सरिया कानून के तहत होने, वक्फ के फैसले को चुनौती नहीं दी जा सकने और सार्वजनिक अदालतों में नहीं होने के कारण कोई भी आरोप साबित नहीं हो पाए हैं। उधर वक्फ बोर्डों के पदाधिकारी मालामाल होते रहे हैं।नये वक्फ कानून से आम मुसलमानों को कोई कठिनाई नहीं आएगी। वैसे भी वक्फ ने अपनी आमदनी का उपयोग किसी गरीब मुसलमान की पढ़ाई-लिखाई अथवा उसका जीवनस्तर सुधारने के लिए

किया हो इसका उदाहरण नहीं मिलता। काश, अगर वक्फ बोर्ड मुसलमानों की दशा-दिशा सुधारने की कोई पहल करता होता तो आज हालात कुछ और होते। हां, वक्फ बोर्डों पर काबिज लोग जीवनभर ऐशोआराम का जीवन जरूर जीते रहे।संसद में वक्फ बिल पर चर्चा का जवाब देते हुए अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री किरेन रिजजू ने बताया कि वक्फ बोर्डों के पास लाखों करोड़ की सम्पत्ति होने के बावजूद इसका इस्तेमाल गरीब मुसलमानों के पक्ष में नहीं होने के कारण अराजकता की स्थिति थी। हम बिल नहीं लाते तो वह संसद भवन पर भी दावा कर सकते थे। गृह मंत्री अमित शाह कहते हैं कि नये बिल से अब वक्फ के आदेश को अदालत में चुनौती दी जा सकेगी। पहले वक्फ का फैसला ही अंतिम होता था। यह गलत धारणा है कि नया वक्फ कानून मुसलमानों के धार्मिक आचरण, उनके द्वारा दान की गई सम्पत्ति में हस्तक्षेप करेगा। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान भी कहते हैं कि देशभर में वक्फ का दुरुपयोग करना एक बीमारी बन गई है। इसे रोकने में नया कानून कारगर होगा। आरिफ साहब कहते हैं कि गरीबों, कमजोरों और जरूरतमंदों पर अपनी आमदनी में से खर्च करने की बात कुरआन में भी लिखी गई है। लेकिन वक्फ यह सब कहां करता था। वक्फ के जरिये न तो कोई अस्पताल चलता है न ही बढ़िया स्कूल-कालेज। इसके जिम्मेदारों ने वक्फ को हमेशा अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया है। इसलिए वक्फ की जमीन पर धर्मार्थ काम करने की जरूरत है। उधर, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कहते हैं कि यह कानून मुसलमानों की सम्पत्ति हड़पने के लिए बनाया गया है। यह भारत के मूल विचारों पर हमला है। कांग्रेस इसका विरोध करेगी। ऑल इंडिया मजलिस-ए इत्तेहादुल मुसलमीन के अध्यक्ष सांसद असदुद्दीन ओवैसी का कहना है कि भाजपा मस्जिद- मन्दिर में टकराव बढ़ाकर देश को अस्थिरता में धकेलना चाहती है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कहती हैं कि वह पश्चिम बंगाल में कानून को लागू नहीं होने देंगी। मुंगेरीलाल की तरह हसीन सपने देखते हुए बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव कहते हैं कि अगर बिहार में उनकी सरकार बनती है तो वह इस कानून को लागू नहीं होने देंगे। सपा-बसपा के नेता भी कुछ इसी तरह की बात कहते हैं। मुझे कहने दीजिए कि विपक्ष के नेता वक्फ कानून का विरोध कर सिर्फ और सिर्फ मुसलमानों के हमदर्द बनने का दिखावा कर रहे हैं। ये वही लोग हैं जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद 370 हटाने का विरोध किया था। ये वही लोग हैं जो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लगाए टैरिफ पर चुप रहते हैं। ये वही लोग हैं जो महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की समस्या आदि पर सड़क पर निकल कर विरोध करना भूल गए हैं। ये वही लोग हैं जो समाज में जातीयता का जहर घोलने पर आमादा हैं। ये वही लोग हैं जो जाने-अनजाने भाजपा की बनाई बिसात पर चौसर खेलने को अभिशप्त हैं।दरअसल, भाजपा तो शुरू से चाहती है कि देश का जनमत हिन्दू-मुस्लिम में विभाजित हो जाए ताकि उसे आसानी से बहुमत मिलता रहे। सवाल नये वक्फ कानून पर नहीं, बल्कि कानून बनाने के समय पर होना चाहिए। 2014 और 2019 में जब भाजपा को संसद में पूर्ण बहुमत था। उस समय भाजपा चाहती तो यह कानून आसानी से बनाया जा सकता था। लेकिन तब भाजपा ने ऐसा नहीं किया। अब जबकि लोकसभा में भाजपा के महज 240 सांसद हैं तब यह कानून बनाकर भाजपा ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के मुखिया चिराग पासवान, राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी, हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा के जीतनराम मांझी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार सरीखे अपने सहयोगी दलों के नेताओं की मुस्लिम परस्ती को खुलेआम चुनौती दे दिया है। साथ ही यह संदेश भी कि ' वृंदावन में रहना है तो राधे-राधे कहना होगा'। बिहार में इसी साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होनेवाले हैं। इसका सर्वाधिक नुकसान नीतीश की पार्टी जनता दल (यू), चिराग पासवान की पार्टी लोजपा (रामविलास) और जीतनराम मांझी की पार्टी हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा को होगा। भाजपा ने अपने चक्रव्यूह में इन्हें घेर लिया है और निकलने का इनके पास कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है। वक्फ बिल पर संसद में जनता दल के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीवरंजन सिंह उर्फ़ ललन सिंह की दलील सुनकर जदयू में भगदड़ की स्थिति बन गई और उसके दर्जनभर से अधिक नेताओं ने पार्टी छोड़ दी है। कई अभी पार्टी छोड़ने की कगार पर बैठे हैं और उचित समय का इंतजार कर रहे हैं।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता का भुवनेश्वर के एक गेस्ट हाउस में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद संबित पात्रा ने गर्मजोशी से स्वागत किया। दिल्ली विधानसभा के उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट भी मौजूद थे।

राष्ट्र और मानवता के कल्याण हेतु धर्मानुकूल आचरण को अनिवार्य मानते हैं मोहन भागवत

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने गत दिवस गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुरा में स्थित सदगुरु धाम में श्री भावभावेश्वर महादेव मंदिर के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से सचेत किया कि भय अथवा प्रलोभन का दैनिक जीवन में सामना करना पड़ सकता है और ये लोगों को उनके धर्म से दूर ले जा सकते हैं लेकिन धर्म ही खुशी की ओर ले जा सकता है। धर्म हमें जोड़ता है और सही रास्ते पर ले जाता है। इसीलिए भय या प्रलोभन के प्रभाव में आकर लोगों को अपना धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहिए। संघ प्रमुख ने कहा कि हम एक जुट होना जानते हैं और एक जुट होना भी चाहते हैं । हम किसी से लडना नहीं चाहते लेकिन आज भी कुछ ऐसी ताकतें मौजूद हैं जो चाहती हैं कि हम अपने आप को बदल बदल दें हमें ऐसी ताकतों से बच कर रहना है।संघ प्रमुख ने महाभारत काल का एक दृष्टांत देते हुए कहा कि उस काल में धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास करने वाली ताकतें मौजूद नहीं थीं लेकिन दुर्योधन ने पांडवों का राज्य हड़पने के लिए जो कुछ किया वह अधर्म था। संघ प्रमुख ने दैनिक जीवन में धार्मिक आचरण को व्यवहार में लाने का आह्वान करते हुए कहा कि लालच और भय हमें अपनी आस्था से विमुख करते हैं इसीलिए सदगुरु धाम जैसे स्थलों का निर्माण किया गया है। लोगों में धार्मिक चेतना के प्रचार प्रसार हेतु सदगुरु धाम के द्वारा संचालित गतिविधियों एवं कार्यों की सराहना करते हुए संघ प्रमुख ने कहा कि यह संस्थान सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में जाकर आदिवासियों के उत्थान के लिए सामाजिक गतिविधियों का संचालन कर रहा है। अतीत में जब इस तरह के केंद्रों का अभाव था तब तपस्वी गांव गांव में अपने सत्संग कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को धर्म के मार्ग पर दृढ़ रखते थे लेकिन अब आबादी बढ़ जाने से सदगुरु धाम जैसे केंद्र बन गये हैं जहां समाज के लोग एकत्र हो कर पूजा करते हैं और आध्यात्मिक सत्संग का लाभ प्राप्त करते हैं । यहां उनके कला का अभ्यास करने का अवसर भी मिलता है। संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को रेखांकित किया कि सदगुरु धाम जैसे आध्यात्मिक केंद्र लोगों का धर्म परिवर्तन नहीं करते बल्कि उन्हें अपने धर्म पर दृढ़ रहकर धर्म के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे केंद्रों को मजबूत करना हमारी जिम्मेदारी है।इसी से हमारा कल्याण , राष्ट्र की सेवा और संपूर्ण मानवता का कल्याण सुनिश्चित होगा।भागवत ने कहा कि धर्म के अभाव में मनुष्य बुरी आदतों में पड़कर जीवन बर्बाद कर लेता है और धर्म के अनुसार आचरण करने से समाज और राष्ट्र का कल्याण होता है। यही हमारे राष्ट्र की प्रगति भी सुनिश्चित करता है। भागवत ने कहा कि हमारा सनातन धर्म किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखता इसीलिए सारी दुनिया भारत की ओर देख रही है । संघ प्रमुख ने कहा कि भारत को अपनी आध्यात्मिक परंपरा के मार्ग पर सतत अग्रसर रहना चाहिए क्योंकि सारी दुनिया मानती है कि भारत के पास ही इस क्षेत्र में सारी दुनिया का नेतृत्व करने का सामर्थ्य है।गौरतलब है कि गुजरात के वलसाड जिले के अंतर्गत धरमपुरा की हरी-भरी पहाड़ियों के मध्य बसा श्री सदगुरु धाम पिछले ढाई दशकों से दक्षिण गुजरात में विशेष धार्मिक एवं आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ है । श्री सदगुरु धाम में निर्मित भगवान भाव भावेश्वर के भव्य मंदिर में दर्शन लाभ हेतु प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन होता है। इस भव्य मंदिर के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सरसंघचालक मोहन भागवत की उपस्थिति ने इस समारोह को और भी महत्वपूर्ण बना दिया। 30 मार्च से 6 अप्रैल तक यहां शिव पुराण कथा का आयोजन किया गया जिसे सुनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। लगभग एक माह तक चलने वाले रजत जयंती समारोह में प्रथम दिवस से ही दूर दूर से श्रद्धालुओं के आगमन का क्रम जारी है।

मेष राशि: आज आपका दिन शुभ रहने वाला है। शिक्षकों के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला हैं। आपको जल्द ही बड़ी सफलता मिलने वाली है। अगर आप अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके हैं, तो आपको किसी अच्छी कंपनी से जॉब का ऑफर मिल सकता है। सिविल सेवा करने वाले लोग आज कुछ नया करेंगे। आज आपका पारिवारिक जीवन खुशहाल रहेगा। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपका व्यापार बढ़ेगा साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

वृष राशि: आज आपके लिए दिन बेहतरीन रहने वाला है। आपको नौकरी में तरक्की के साथ-साथ आपकी इनकम में इंक्रीमेंट होने के योग हैं। आपका पारिवारिक जीवन अत्यंत सुखद रहने वाला है। आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके वैवाहिक जीवन में सुंदर तालमेल बना रहेगा। संतान की तरफ से आपको किसी प्रकार की खुशखबरी मिलेगी। आपके घर किसी जरूरी काम से दूर के किसी रिश्तेदार के आने की संभावना बन रही है।

मिथुन राशि: आज आपका दिन खुशहाल बीतेगा। आज आपका मन प्रसन्न रहेगा। लेखन आदि कार्यों से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। कार्यस्थल पर अफसरों के साथ सद्भाव बनाकर रखेंगे। आपको तरक्की के कई मौके मिलेंगे। आप अपनी कड़ी मेहनत और सकारात्मक व्यवहार के जरिए कठिन परिस्थितियों से बाहर निकलेंगे।

कर्क राशि: आज आपके लिए अनुकूल परिस्थितियां रहेंगी। आज आप किसी खेलकूद में हिस्सा ले सकते हैं। बिजनेस करने वालों को किसी अच्छी कंपनी से जुड़कर बिजनेस को बढ़ाने का सुनहरा मौका मिलेगा। बिजनेस से संबंधित यात्रा करनी पड़ेगी। आज आप कुछ अनुभवी लोगों से मिलेंगे। व्यापार में आपको काफी अच्छे फायदे देखने को मिलेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में अनुकूल परिणाम देखने को मिलेंगे।

सिंह राशि: आज आपके लिए दिन पॉजिटिव रहेगा। ऑफिस में कलीग्स के साथ अच्छा तालमेल बना रहेगा। सीनियर्स आपके काम से प्रसन्न होंगे। आपके लिए पदोन्नति के आसार हैं। कार्यस्थल पर समझदारी पूर्वक लिए गए फैसले आपको बेहतर परिणाम देंगे। आपके कार्यों में जीवनसाथी का सहयोग आपको आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

कन्या राशि: आज आपका दिन खास रहने वाला है। किसी पुरानी जमीन जायदाद से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। आपको सरकारी क्षेत्र में अच्छी नौकरी मिलेगी। आप और आपका परिवार बहुत खुश होगा।

तुला राशि: आज आपका दिन आनंद और उत्साह से भरपूर रहेगा। कार्यक्षेत्र में आप अपने काम में कुछ नए विचार लाएंगे। आपका सकारात्मक रवैया ही आपको नौकरी में तरक्की दिलाएगा। आपके बॉस आपको एप्रिशिएट करेंगे। आपके सगे संबंधी आपके सहयोग के लिए तत्पर रहेंगे। आज आपका, आपके मनपसंद जगह पर ट्रांसफर होगा। आज उम्मीद से अधिक लाभ की संभावना है।

वृश्चिक राशि: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। यदि आप कंस्ट्रक्शन के बिजनेस से जुड़े हुए हैं तो आपके के लिए लाभ के योग हैं आप अपने काम में कुछ परिवर्तन लाने का मन बना सकते हैं। दांपत्य रिश्ते को और मजबूत बनने के लिए जीवनसाथी को उपहार देंगे।

धनु राशि: आज आपका दिन खुशहाल बीतेगा। शिक्षा से संबंधी आपकी मनोकामना पूरी होगी। आपको परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ रिजल्ट मिलेंगे। अच्छे कॉलेज में आप एडमिशन पाएंगे। आगे चलकर आपको नये सुनहरे अवसर मिलने की संभावना बढ़ेगी। आप अपने खानपान पर ध्यान रखेंगे। जिससे आपकी सेहत फिट एण्ड फाइन रहेगी। अगर आप फाइनेंस डिपार्टमेंट या सेल्स में काम करते हैं तो आपको आपकी नॉलेज से काफी फायदा होगा।

मकर राशि: आज आपका दिन पाज़िटिव रहेगा। बिजनेस के सिलसिले में बनाई गई योजनाएं कारगर साबित होगी। आपके लिए धन लाभ की संभावना बढ़ेगी ?। मास कम्युनिकेशन के छात्रों के लिए खास अवसर मिलने की संभावना है। आपके अंदर कलात्मक चीजों के प्रति उत्साह पैदा होगा। आप किसी क्राफ्ट एग्जीबिशन में मित्रों के साथ जा सकते हैं। आप अपने अंदर सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखेंगे।

कुंभ राशि: आज का दिन आपके लिए सफलता दिलाने वाला है। नौकरी ढूंढ रहे युवाओं को अच्छी नौकरी मिलने के योग हैं। प्रापर्टी डीलर का काम करने वालों के कामकाज बेहतर रहेंगे। मास्टर डिग्री ले रहे हैं तो आपको कैंपस सलेक्शन में अच्छी नौकरी मिल सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी रहेगी। नौकरी कर रहे युवाओं को उच्च अधिकारियों का पूरा सपोर्ट मिलेगा।

मीन राशि: आज आपका दिन उत्साह से भरपूर रहेगा। आपको किसी अच्छी कंपनी से जॉब के लिए ऑफर मिलेगा। जिससे आपका भविष्य सुरक्षित होगा। आपकी मेहनत के अच्छे परिणाम मिलेंगे। आपके काम करने के तरीकों में बदलाव आएगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: अजूबा नहीं

विवेक रंजन श्रीवास्तव

एआई कोई अजूबा नहीं, बल्कि मानव मस्तिष्क की ही एक उपज है। यह हमारी जीवनशैली को अधिक आरामदायक, सुलभ और प्रभावशाली बना सकती है-बशर्ते हम इसे विवेक और संतुलन के साथ अपनाएँ।

विद्यालय के दिनों में विज्ञान: लाभ और हानि जैसे विषयों पर भाषण, वाद-विवाद और निबंध लिखना आम बात थी। समय बदला, विज्ञान ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पहले रेडियो, फिर टेलीविजन, मोबाइल और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के रूप में हमारी जिंदगी आसान बनाने के लिए हस्तक्षेप बढ़ाया है। आज एआई हमारी बातचीत, सोच, कामकाज, और यहां तक कि निर्णयों तक को प्रभावित कर रहा है। ऐसे में एआई के लाभ और हानि पर विचार करना आवश्यक हो गया है।

एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है, जो मशीनों को सीखने, तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। वर्ष 2025 में वैश्विक एआई बाज़ार 244.22 बिलियन तक पहुँच चुका है, और 2031 तक इसके 26.6त्न की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की संभावना है। यह दर्शाता है कि यह तकनीक केवल भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की भी एक सशक्त वास्तविकता है।

ए.आई. के लाभ

एआई के उपयोग से दक्षता और उत्पादकता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। यह 24/7 कार्य कर सकती है, मानव त्रुटियों को कम करती है, और डेटा विश्लेषण द्वारा निर्णय लेने में सहायता करती है। स्वास्थ्य, वित्त और निर्माण जैसे क्षेत्रों में यह क्रांतिकारी बदलाव ला रही है।

उदाहरण के लिए, विनिर्माण इकाइयों में एआई संचालित रोबोट उत्पादन को सुव्यवस्थित करते हैं। एआई आधारित चैटबॉट्स ग्राहक सहायता को बेहतर बनाते हैं-नेटफ्लिक्स की एआई सिफारिशें सालाना 1 बिलियन का मुनाफा कमा रही हैं।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में एआई नई दवाओं की खोज को गति दे रही है-जैसे नवीडिया और फाइज़र का 80 मिलियन का निवेश। यह खतरनाक कार्यों में

मानव जीवन की रक्षा करती है, और पर्यावरणीय मॉडलिंग से जलवायु संकट की समझ को बेहतर बनाती है।एआई का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह हर व्यक्ति के पास जानकारी और समाधान की पहुंच संभव बनाता है। इसके चलते शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के नए द्वार खुल रहे हैं।

ए.आई. के नुकसान

हर क्रांति की एक कीमत होती है। एआई के आगमन से स्वचालन बढ़ा है, जिससे पारंपरिक नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है। एचआर, ग्राहक सेवा, लेखांकन जैसे क्षेत्रों में मानव संसाधनों की आवश्यकता घट रही है।एआई को लागू करने की लागत भी ऊँची है-हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, और विशेषज्ञों की ज़रूरत छोटे व्यवसायों के लिए चुनौती है।गोपनीयता की बात करें तो एआई विशाल डेटा पर आधारित है, जिससे डेटा उल्लंघन, निगरानी, और एल्गोरिदमिक पक्षपात जैसे खतरे बढ़ जाते हैं।

एआई का अत्यधिक उपयोग मानवीय संबंधों और संवेदनशीलता को भी प्रभावित कर सकता है- यह भावनाओं को नहीं समझ सकती, जो कि स्वास्थ्य सेवा और मानसिक परामर्श जैसे क्षेत्रों में ज़रूरी हैं।

भविष्य की सबसे बड़ी चिंता यह है कि एआई कहीं ऐसी दिशा में न बढ़ जाए, जहाँ उसका नियंत्रण मानव के हाथों से निकल जाए। जनरेटिव एआई कभी-कभी भ्रामक जानकारी भी दे सकता है, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। यह मानना होगा कि एआई मानव का विकल्प नहीं, सहायक है। हमें इससे भयभीत होने की बजाय इसके लाभों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए, और इसकी सीमाओं को समझते हुए मानवीय संवेदनाओं, कला, संस्कृति और मौलिकता की रक्षा करनी चाहिए।एआई हमारे समय की वह क्रांति है, जो सही दिशा में उपयोग हो तो मानव जाति के लिए वरदान साबित हो सकती है- और गलत दिशा में गई तो चुनौती। ज़रूरत है इसे नियंत्रित नवाचार के सकारात्मक रास्ते पर आगे बढ़ाने की। जहां मानवीय क्षमता कुछ वर्किंग घंटे प्रतिदिन से अधिक नहीं हो सकती, ऐ आई हमारे लिए चौबीसों घंटे बिना थके लगातार काम कर सकता है। हम किसी काम को आज की जगह कल पर टाल सकते हैं, किंतु ए आई तुरत फुरत ही काम निपटाता है। बस हमें इसे सही प्राम्पट देने की आवश्यकता होती है। इसलिए ए आई के बढ़ते प्रयोग से प्राम्पट इंजीनियरिंग में रोजगार बढ़ भी रहे हैं । यह इस नई टेक्नोलॉजी का सकारात्मक प्रभाव है।

नेशनल हेराल्ड मामला : ईडी की चार्जशीट पर बोले मल्लिकार्जुन खड़गे, ये सब बीजेपी के इशारे पर हो रहा है

नई दिल्ली (ए.)। नेशनल हेराल्ड मामले में राहुल गांधी और सोनिया गांधी के खिलाफ ईडी की चार्जशीट पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि इस मामले में कुछ भी नहीं है। वित्तीय परेशानियों के कारण इसे कुछ समय के लिए बंद कर दिया गया था। सोनिया गांधी ने कर्ज और दान के साथ इसे पुनर्जीवित करने की कोशिश की। अब, वे कहते हैं कि कर्ज लेना गलत है। उन्होंने कहा कि भाजपा कानून के खिलाफ काम कर रही है। जो गलत है, वह गलत है और हम इसे साबित करेंगे। खड़गे ने दावा किया कि हमारा विरोध प्रदर्शन पूरे देश में होगा और हम लोगों को बताना चाहते हैं कि हमें बेवजह परेशान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमने एक संगठन से पैसा उधार लेकर दूसरा संगठन चलाया, इसमें क्या बुराई है? पंडित नेहरू ने जो अखबार शुरू किया था, वह सत्ता से बाहर होने पर बंद हो गया। हमने तो बस उसे फिर से शुरू करने की कोशिश की। अब वे (बीजेपी) अपने संगठन का विस्तार कर रहे हैं, पिछले 8-9 सालों में इतना पैसा कहां से आया। वहीं, गुरुग्राम भूमि मामले में कारोबारी रॉबर्ट वाड्रा से ईडी की पूछताछ पर खड़गे ने कहा कि यह उनका निजी मामला है। वह जवाब देने में सक्षम हैं। पार्टी का इसमें कोई दखल नहीं है। कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि यह कानूनी छद्मवेश में प्रतिशोध के अलावा और कुछ नहीं है।

ईडी को जवाब देना चाहिए कि एनडीए के किसी सहयोगी या भाजपा नेता को ईडी ने क्यों नहीं छुआ। चयनात्मक न्याय वास्तव में राजनीतिक ठगी के अलावा और कुछ नहीं है। जयराम रमेश ने कहा कि पिछले दो दिन से प्रतिशोध, उत्पीड़न और धमकी देने की राजनीति जारी है। कांग्रेस नेतृत्व खासतौर पर CPP चेयरपर्सन सोनिया गांधी जी और नेता विपक्ष राहुल गांधी को जानबूझकर निशाना बनाया गया। जनता के मुद्दों, विदेश नीति और आर्थिक संकट से ध्यान हटाने के लिए ये प्रयास किया जा रहा है। इस प्रतिशोध की राजनीति के सूत्रधार दो व्यक्ति हैं, जिनकी मानसिकता आपराधिक है, लेकिन हम चुप नहीं रहेंगे। आज भी राहुल गांधी जी गुजरात में हैं और हमारे साथियों ने देशभर में ED से जुड़े मामले को लेकर प्रदर्शन किए हैं। हमें चुप नहीं किया जा सकता। हम जनता के मुद्दे उठाते रहेंगे।

नड्डा के घर सीक्रेट बैठक, पीएम मोदी की राष्ट्रपति से मुलाकात.. क्या कुछ बड़ा करने की तैयारी में सरकार

सियासी गलियारों में अटकलों का बाजार गर्म

नई दिल्ली,(ए)। देश में इन दिनों नए वक्फ कानून को लेकर राजनीति जारी है। संसद से पारित नए कानून को लेकर विरोध प्रदर्शन की आग में जहां एक ओर पश्चिम बंगाल के कई इलाके हिंसा की आग में जल रहे हैं। वहीं कानून की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को सुनवाई शुरु हो गई। इस बीच दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ-साथ बीजेपी के तमाम नेताओं की हालिया गतिविधि ने सभी का ध्यान खींचा है। अटकलें है कि क्या देश में कुछ बड़ा होने वाला है। दरअसल बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा के आवास पर बीती रात एक हाई-प्रोफाइल बैठक ने इन बातों को हवा दी। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और अश्विनी वैष्णव जैसे दिग्गज नेता शामिल हुए। बीजेपी के शीर्ष नेताओं की यह बैठक करीब ढाई घंटे तक चली।

उर्दू भारत में ही जन्मी भाषा, इसे किसी धर्म से जोड़ना है गलत

सुप्रीम कोर्ट ने सुनाया ऐतिहासिक फैसला, याचिका को किया खारिज

अकोला,(ए)। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के अकोला जिले में पातुर नगर परिषद के साइनबोर्ड पर उर्दू भाषा के इस्तेमाल को बरकरार रखते हुए एक अहम फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा कि भाषा संस्कृति का हिस्सा है और इसे लोगों को बांटने का कारण नहीं बनना चाहिए। कोर्ट ने उर्दू को गंगा-जमुनी तहजीब की बेहतरीन मिसाल बताते हुए इसे भारत में जन्मी भाषा करार दिया है।जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस के विनोद चंद्रन की पीठ ने पातुर नगर परिषद की पूर्व पार्षद वर्षाताई संजय बागड़े की याचिका को खारिज कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में भारत की भाषाई विविधता की सराहना की और कहा कि हमें अपने पूर्वाग्रहों को त्यागकर हर भाषा से दोस्ती करनी चाहिए। कोर्ट ने यह भी कहा कि अगर भारत का विभाजन न हुआ होता, तो हिंदी और उर्दू का मिश्रित रूप हिंदुस्तानी शायद देश की राष्ट्रीय भाषा होती। याचिकाकर्ता ने साइनबोर्ड पर उर्दू भाषा के इस्तेमाल को चुनौती दी थी और दावा किया था कि महाराष्ट्र स्थानीय प्राधिकरण अधिनियम, 2022 के तहत केवल मराठी का इस्तेमाल होना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ में उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के कार्यों की समीक्षा की.

रिहैब सेंटर में मरीज के साथ क्रूरता की हदें पार, पहले घसीटा फिर की बेरहमी से पिटाई , वीडियो वायरल

बेंगलुरु (आरएनएस)। कर्नाटक के बेंगलुरु से एक हैरान करने वाला वीडियो सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो में बेंगलुरु के बाहरी इलाके में स्थित एक पुनर्वास केंद्र (रिहैब सेंटर) में एक मरीज के साथ क्रूरता की हदें पार करते हुए मारपीट की जा रही है। वीडियो में एक व्यक्ति पहले मरीज को घसीटता हुआ दिखाई दे रहा है, और फिर उस पर लगातार डंडों से वार कर रहा है। इस घटना का वीडियो वायरल होने के बाद लोगों में भारी आक्रोश है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग उठ रही है।

सामने आए सीसीटीवी फुटेज में साफ देखा जा सकता है कि आरोपी एक कमरे में इलाज करा रहे व्यक्ति को बंद कर देता है और फिर बेरहमी से डंडे से पीटता रहता है। चौंकाने वाली बात यह है कि वहां मौजूद अन्य लोग इस पूरी घटना को मूक दर्शक बनकर देखते रहते हैं। वीडियो में पीड़ित को लगातार पीटा जा रहा है। बताया जा रहा है कि यह वीडियो बेंगलुरु से लगभग 30 किलोमीटर दूर नेलमंगला ग्रामीण क्षेत्र के अंदर स्थित एक निजी पुनर्वास केंद्र का है।पुलिस के अनुसार, यह वीडियो हाल ही में सामने आया है, लेकिन घटना कुछ समय पहले हुई थी। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इसी केंद्र से जुड़ी कुछ तस्वीरों में हमले में शामिल कुछ व्यक्तियों को जन्मदिन मनाते हुए और चाकू से केक काटते हुए भी देखा जा सकता है। पुलिस ने इस मामले का स्वत: संज्ञान लेते हुए आर्म्स एक्ट सहित संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया है और आगे की जांच जारी है।

मकान की तीसरी मंजिल पर बेडरूम में घुस गया सांड, नीचे उतारने के लिए बुलानी पड़ी क्रेन

जमशेदपुर (आरएनएस)। जमशेदपुर के सोनारी इलाके में एक सांड की वजह से घंटों अफरा-तफरी मची रही। सांड एक मकान का दरवाजा खुला पाकर न सिर्फ अंदर घुस आया, बल्कि सीढ़ियों से मकान की तीसरी मंजिल पर जा पहुंचा और जमकर उत्पात मचाया। मोहल्ले के लोगों की लाख मशक्कत के बाद सांड नीचे नहीं उतरा। करीब चार घंटे बाद सांड को एक क्रेन के सहारे छत के रास्ते से नीचे उतारा गया।बताया गया कि सोनारी आदर्श नगर के न्यू ग्वाला बस्ती के रिहायशी इलाके में बुधवार को तीन सांड सड़क पर आपस में लड़ रहे थे। इसी दौरान एक सांड मनोज यादव नामक शख्स के घर के अंदर दाखिल हो गया। उसे निकालने की कोशिश की गई तो वह बाहर निकलने के बजाय सीढ़ियों से होता हुआ तीसरी मंजिल पर स्थित बेडरूम में जा पहुंचा। उसने बेडरूम के सामान इधर-उधर कर दिए।इसकी जानकारी मिलते ही मोहल्ले के सैकड़ों लोग घर के अंदर और बाहर इकट्ठा हो गए। कुछ लोगों ने सांड की गर्दन में रस्सी बांधकर नीचे उतारने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। बाद में 'बजरंग दल' संगठन से जुड़े लोगों ने एक क्रेन बुलाया। 10-12 लोगों ने एक साथ ऊपरी मंजिल पर पहुंचकर सांड को रस्सी से बांधा और इसके बाद छत के रास्ते क्रेन के सहारे धीरे-धीरे नीचे उतारा।कुछ स्थानीय लोगों ने पूरे घटनाक्रम का वीडियो रिकॉर्ड किया, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जमशेदपुर में आवारा सांड के उत्पात और हमले की यह कोई पहली घटना नहीं है। इसी साल जनवरी में साकची थाना अंतर्गत एमजीएम गोलचक्कर के पास पोटका हल्दीपोखर निवासी महफूज सांड के हमले में बुरी तरह जख्मी हो गए थे।मार्च 2023 में शहर के साकची शीतला मंदिर के पास सड़क पर घूम रहे सांड ने दो लोगों अशोक अग्रवाल और राज किशोर सिंह को पटककर मार डाला था।

राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस, सीएम भजनलाल शर्मा ने खोला पिटारा, की 5 बड़ी घोषणाएं

जयपुर , (आरएनएस)। राजस्थान पुलिस के 76वें स्थापना दिवस पर राजस्थान पुलिस एकेडमी (आरपीए) में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 5 बड़ी घोषणाएं की। वर्दी भत्ता से लेकर मेस भत्ता बढ़ाने का ऐलान किया।सीएम ने पुलिस बल को संबोधित करते हुए कहा कि वर्दी भत्ता 7 हजार रुपए से बढ़ाकर 8 हजार रुपए और मेस भत्ता 2400 से बढ़ाकर 2700 रुपए किया गया। इसके अलावा, रोडवेज की एक्सप्रेस बसों के साथ-साथ सेमी डीलक्स बसों में भी निशुल्क यात्रा का लाभ पुलिसकर्मी ले पाएंगे। सीएम ने आगे कहा कि 200 करोड़ रुपये का पुलिस मॉडर्नाइजेशन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड गठित किया जाएगा। इसके अलावा, उन्होंने पुलिस विभाग एवं कारागार विभाग में कार्यरत लांगुरिया के मानदेय में 10 फीसदी वृद्धि का भी ऐलान किया। मुख्यमंत्री भजन लाल ने अपने संबोधन में कहा कि राजस्थान में पुलिस आधुनिकीकरण और आधारभूत संरचना को मजबूत करने के लिए 200 करोड़ रुपये का पुलिस मॉडर्नाइजेशन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड गठित किया जाएगा। कानून व्यवस्था को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से पुलिस में 10 हजार पदों पर भर्ती की स्वीकृति प्रदान की गई है। प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति सुधारने और अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए 5,500 नए पदों का सृजन किया गया है, साथ ही इस वर्ष 3,500 अतिरिक्त पद सृजित करने का प्रस्ताव है।उन्होंने कहा कि पद्मिनी, कालीबाई और अमृता देवी महिला पुलिस बटालियनों की स्थापना के लिए पदों की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी की गई है। इसके अलावा, 500 कालका पेट्रोलिंग टीमों के गठन के लिए प्रथम चरण में 1 हजार कांस्टेबल के नए पदों के सृजन की स्वीकृति भी दी गई है।

एयर होस्टेस से आईसीयू में कथित दुष्कर्म के मामले में मेदांता अस्पताल ने दी सफाई

गुरूग्राम (आरएनएस)। गुरुग्राम स्थित मेदांता अस्पताल में एक 46 वर्षीय एयर हॉस्टेस के साथ कथित रूप से आईसीयू में दुष्कर्म किए जाने के आरोप ने सनसनी फैला दी है। महिला की ओर से दर्ज कराई गई शिकायत में कहा गया है कि वह 6 अप्रैल को अस्पताल के आईसीयू में वेंटिलेटर पर थी, जब किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनके साथ दुष्कर्म किया। पीड़िता ने अस्पताल स्टाफ पर गंभीर आरोप लगाए हैं। इस मामले में गुरुग्राम पुलिस ने तुरंत एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं, मेदांता अस्पताल की ओर से मेडिकल सुपरिटेंडेंट संजय दुरानी ने एक आधिकारिक बयान जारी कर कहा है कि अस्पताल को इस शिकायत की जानकारी दी गई है और वे पूरी तरह से जांच एजेंसियों के साथ सहयोग कर रहे हैं।बयान में कहा गया है, हमें एक मरीज की शिकायत के बारे में पता चला है और हम संबंधित अधिकारियों द्वारा की जा रही जांच में पूरा सहयोग कर रहे हैं। इस स्तर पर, कोई भी आरोप साबित नहीं हुआ है, और संबंधित समय अवधि के लिए अस्पताल से सीसीटीवी फुटेज सहित सभी प्रासंगिक दस्तावेज पुलिस को सौंप दिए गए हैं। हम जांच की प्रक्रिया में सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। बता दें कि 46 वर्षीय पीड़िता पश्चिम बंगाल की निवासी है और हाल ही में गुरुग्राम के एक होटल में ठहरी हुई थी। पुलिस जांच में यह सामने आया है कि महिला की तबीयत होटल के स्विमिंग पूल में डूबने के कारण बिगड़ गई थी, जिसके बाद उसे मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया।

बाजवा अपने स्वार्थों के लिए किसी अप्रिय घटना के होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं : मान

संगरूर (आरएनएस)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने मंगलवार को पंजाब में 50 बम आने के दावे का खुलासा करने से भागने के लिए विपक्षी दल के नेता प्रताप सिंह बाजवा पर निशाना साधते हुए कहा कि बाजवा अपने संकीर्ण स्वार्थों के लिए किसी अप्रिय घटना के होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि लोगों में दहशत फैलाई जा सके।मान ने कहा कि अगर बाजवा के पास बमों के बारे में किसी भी तरह की जानकारी है, तो वे इसे सार्वजनिक करने से क्यों हिचक रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि बाजवा इन बमों के फटने की प्रतीक्षा में बैठे हैं, क्योंकि वे पंजाब की शांति और कानून व्यवस्था की आड़ में राजनीतिक रोटियां सेंकने की ताक में हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाजवा ने पंजाब के शांतिप्रिय लोगों में बिना किसी आधार के दहशत फैलाई है और जब सरकार ने बाजवा के इस भ्रामक बयान के खिलाफ मामला दर्ज किया, तो अब वह कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए वकीलों की भीड़ जुटा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विपक्षी दल के नेता को ऐसी ओछी राजनीति से बचना चाहिए क्योंकि आम लोगों

में दहशत पैदा करके वोट हासिल करने का भ्रम नहीं पालना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष को ऐसी बेतुकी बयानबाजी करने के बजाय मुद्दों पर आधारित राजनीति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मान ने कहा कि लोगों की खुशहाली और राज्य की भलाई के लिए वे समर्पित होकर काम कर रहे हैं, लेकिन कुछ राजनीतिक नेताओं को यह हजम नहीं हो रहा, जिसके कारण वे बार-बार मेरे खिलाफ जहर उगल रहे हैं। उन्होंने कहा,पारंपरिक पार्टियां मुझसे ईर्ष्या करती हैं क्योंकि मेरा संबंध साधारण परिवार से है। ये नेता सत्ता में बने रहने को अपना मूलभूत अधिकार समझते थे, जिसके कारण इन्हें यह हजम नहीं हो रहा कि एक आम आदमी इतने बेहतर ढंग से राज्य का शासनकाल कैसे चला रहा है। उन्होंने कहा कि कल यही नेता मेरी तारीफ करते थे कि बहुत अच्छा कलाकार है, जब मैं टीवी पर कलाकार था। मान ने अकाली नेता सुखबीर सिंह बादल पर निशाना साधते हुए कहा कि सुखबीर बादल राजनीतिक रूप से असफल हो चुके राजनेता हैं जो अपने जघन्य अपराधों की सजा भुगत रहे हैं। राज्य की बागडोर संभालने के बाद ऐसे नेताओं ने कई साल तक लोगों को मूर्ख बनाया, लेकिन अब आम लोगों ने सही मायनों में अपनी ही सरकार को वोट देकर सत्ता में लाया है, जो दिन-रात पंजाब की तरक्की के लिए काम कर रही है।

संक्षिप्त समाचार

सुक्खू ने किलाड़ में बालिका आश्रम का दौरा कर बच्चों से की बातचीत

शिमला (आरएनएस)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने मंगलवार को बालिका आश्रम किलाड़ का दौरा किया और यहां रह रहे बच्चों से बातचीत की और आश्रम के क्लासरूम और उनके रहने के कमरों का निरीक्षण किया। सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार ने सभी अनाथ बच्चों को 'चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट' के रूप में अपनाया है और शिक्षा से लेकर उनकी देखभाल की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कानून बनाकर उन्हें यह अधिकार दिया है। उन्होंने बालिका आश्रम किलाड़ में रह रही बच्चियों से उन्हें मिल रही सुविधाओं के बारे में भी जानकारी ली।मुख्यमंत्री ने आश्रम की सभी लड़कियों को पांच-पांच हजार रुपये देने के साथ-साथ शीघ्र ही उनको एक्सपोजर विजिट पर भेजने की घोषणा की। इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने सोमवार देर शाम एकलव्य स्कूल किलाड़ का भी दौरा किया और बच्चों के साथ बातचीत की। सभी बच्चे मुख्यमंत्री के मिलकर बेहद खुश थे।

बलबीर ने हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीनों के साथ लैस वैन को दी हरी झंडी

चंडीगढ़ (आरएनएस)। पंजाब के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने मंगलवार को यहाँ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण निदेशालय से हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीन और फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोप के साथ लैस अत्याधुनिक वैन को हरी झंडी देकर रवाना किया। गौरतलब है कि इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) ने अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक ज़िम्मेदारी (सीएसआर) पहलकदमी के तहत, पीपल-टू-पीपल हेल्थ फाउंडेशन के सहयोग से पंजाब के स्वास्थ्य विभाग को दो हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीनें और दो फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोप दान किए हैं। सिंह ने आईओसीएल का धन्यवाद करते हुए कहा कि ये मशीनें संगरूर और मलेरकोटला जिलों डायग्नोस्टिक क्षमताओं को और मजबूत करेंगी। उन्होंने कहा कि पंजाब में किए गए 2020-21 के सर्वेक्षण में 2.8:1 का प्रीवलेंस-नोटिफिकेशन अनुपात सामने आया, जो कि स्क्रीनिंग प्रयासों में बढ़ोतरी की आवश्यकता को दर्शाता है। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि 40 फीसदी से अधिक नोटिफाई केस बिना लक्षण वाले थे और इनका पता एक्स-रे के माध्यम से लगाया गया था, जो इस डायग्नोस्टिक साधन की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि कम वजन वाली और आकार में छोटी ये मशीनें हाल ही में 100 दिनों की टीबी मुहिम के दौरान बहुत प्रभावशाली साबित हुईं। इन मशीनों के द्वारा क्षेत्र में लगभग 1.49 लाख एक्स-रे किए गए। आईओसीएल द्वारा मुहैया कराए गए दो फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोप के साथ-साथ इन दो नई हैंडहेल्ड यूनिटों के माध्यम से संगरूर और मलेरकोटला में स्वास्थ्य कर्मियों को व्यापक जांच करने और संवेदनशील समुदायों में टी.बी. के रोग का समय पर पता लगाने और उनका उपचार शुरू करने की भी सुविधा मिलेगी।

केजरीवाल और भगवंत मान के खिलाफ भी दर्ज होनी चाहिए एफआईआर : परगट सिंह

मोहाली, (आरएनएस)। पंजाब में कांग्रेस नेता प्रताप सिंह बाजवा के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद मामला गरमा गया है। पूर्व मंत्री और कांग्रेस विधायक परगट सिंह ने एफआईआर पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की एफआईआर तो केजरीवाल और भगवंत मान पर भी होनी चाहिए। कांग्रेस विधायक परगट सिंह ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, जिस तरह से प्रताप सिंह बाजवा पर एफआईआर की गई है, इस तरीके की 100 एफआईआर भगवंत मान और अरविंद केजरीवाल पर होनी चाहिए, क्योंकि उनकी तरफ से भी गलत जानकारियां दी गई हैं। दिल्ली चुनाव के दौरान उन्होंने कहा था कि हमारे पानी में जहर घोल दिया गया है। जब चुनाव आयोग ने इस मामले पर नोटिस जारी किया तो उन्हें माफी मांगनी पड़ी थी।उन्होंने आगे कहा, इस तरह की एफआईआर पहले भी दर्ज की गई हैं। भारत भूषण आशु, किक्की ढिल्लों और सुखपाल सिंह खैरा के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की गई थी, लेकिन उनका क्या रहा? मुझे लगता है कि यह एफआईआर भी लोटस ऑपरेशन की तरह है, क्योंकि उनके ही विधायक ने बयान दिया था कि 25-25 करोड़ रुपए ऑफर किए गए थे। इसका कोई फायदा नहीं होगा। मैं कहूंगा कि अगर भगवंत मान बीजेपी या किसी से भी मिलकर ऐसी बातें करते हैं तो अच्छा नहीं होगा। जनता किसी को माफ नहीं करती है। दरअसल, प्रताप सिंह बाजवा के खिलाफ 32 बम वाले बयान के बाद मुकदमा दर्ज किया गया। इस मामले में गिरफ्तारी से बचने के लिए बाजवा ने पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट का रुख किया है। इससे पहले पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने कहा, आप जानते हैं कि पंजाब के मुख्यमंत्री ने किस तरह से प्रताप सिंह बाजवा के खिलाफ अनुचित तरीके से मामला दर्ज किया है, जो बदले की राजनीति के संकेत देता है। वह अदालत में पेश हुए और हम देखेंगे कि आगे क्या होता है। उन्होंने कहा कि बाजवा के पिता की हत्या हो चुकी है और खुद उन पर भी हमले हो चुके हैं। ऐसे में अगर उन्होंने किसी संभावित खतरे की बात की है तो उसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है।

हिसार एयरपोर्ट के निकट बनाया जाएगा आईएमसी : सैनी

चंडीगढ़ (आरएनएस)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने मंगलवार को कहा कि हिसार एयरपोर्ट के निकट लगभग तीन हजार एकड़ में औद्योगिक मैन्युफै. रिंग क्लस्टर (आईएमसी) स्थापित किया जाएगा। सैनी ने इस संबंध में नागरिक उड्डयन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। बाद में जा बयान में उन्होंने कहा कि प्रदेश औद्योगिक विकास को गति देने के लिए हिसार स्थित महाराजा अग्रसेन एयरपोर्ट के नजदीक लगभग 3 हजार एकड़ में औद्योगिक मैन्युफै. रिंग क्लस्टर (आईएमसी) स्थापित किया जाएगा। इस पर लगभग 4,680 करोड़ की लागत आएगी। उन्होंने बताया कि आईएमसी हरियाणा सरकार नैशनल इन्डस्ट्रीअल कॉरिडर डेवलपमेंट के साथ मिलकर विकसित करेगी। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के विकसित होने से लगभग 32 हजार करोड़ का निवेश आने और दस हजार से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होने की संभावना है।

जाट बॉक्स ऑफिस कलेक्शन: 5 दिनों में 50 करोड़ का आंकड़ा किया पार, बनी 2025 की चौथी सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म

सनी देओल की फिल्म जाट बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन कर रही है. यह फिल्म 10 अप्रैल, 2025 को स्क्रीन पर आई. इस लेटेस्ट एक्शन फिल्म ने ओपनिंग डे पर शानदार कमाई की और सनी देओल की दूसरी सबसे बड़ी ओपनिंग फिल्म बनकर उभरी. वहीं, पहले वीकेंड पर खास तौर पर रविवार को फिल्म की कमाई में जबरदस्त बढ़ोतरी देखने को मिली. पिछले चार दिनों के शानदार प्रदर्शन के बाद, अंबेडकर जयंती की छुट्टी पर भी यह अच्छा रुझान दिखा रही है. तो चलिए जानते हैं कि भारतीय बॉक्स ऑफिस पर जाट का कलेक्शन कितना हुआ है...सनी देओल-रणदीप हुड्डा की मुख्य भूमिकाओं वाली फिल्म जाट ने वीकेंड पर अच्छी कमाई की है. मेकर्स के मुताबिक, जाट ने पहले दिन 11.6 करोड़ रुपये कमाए. जबकि दूसरे दिन यानी शुक्रवार को इसने 8.5 करोड़ रुपये के साथ 2 दिनों में 20.1 करोड़ रुपये का बिजनेस किया. शनिवार और रविवार को फिल्म के कलेक्शन में उछाल देखा गया.शनिवार को फिल्म ने 12.1 करोड़ रुपये कमाए, जिसके बाद 3 दिनों के बाद फिल्म का टोटल कलेक्शन 32.2 करोड़ रुपये हो गए. रविवार को फिल्म ने सबसे ज्यादा कमाई की. मेकर्स की रिपोर्ट के मुताबिक फिल्म ने 17.1 करोड़ रुपये कमाए, जिसके बाद 4 दिनों के बाद फिल्म का टोटल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 49.3 करोड़ रुपये हो गया है।

14 अप्रैल को जाट ने अच्छी कमाई की है. फिल्म को अंबेडकर जयंती की छुट्टी का भरपूर फायदा मिला है. सनी देओल की एक्शन थ्रिलर फिल्म ने फर्स्ट मंडे को 8.9 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है. इस प्रकार, भारत में जाट ने 5 दिनों में ही 50

करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. मेकर्स की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, जाट का कुल कलेक्शन 58.2 करोड़ रुपये हो गया है। सनी देओल की नई फिल्म जाट अब 2025 की चौथी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली बॉलीवुड फिल्म बन गई है. इसने ओपनिंग वीकेंड में 49.3 करोड़ की कमाई की है. आईएमबीडी के अनुसार, पहले नंबर पर विक्की कौशल की छावा है, जिसने 59 दिनों में 600.6 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। दूसरे पायदान पर सलमान खान की सिकंदर है, जिसने 15 दिनों में 109.1 करोड़ रुपये कमाए है. इसने 9 दिनों में ही दुनियाभर में 200 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया था. यह फिल्म अभी भी सिनेमाघरों में बनी हुई है. तीसरी स्थान पर अक्षय कुमार की फिल्म स्काई फोर्स है. इसने दुनियाभर में 155.4 करोड़ रुपये और घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 122.3 करोड़ रुपये कमाए थे. 5वें नंबर पर शाहिद कपूर की देवा है. इसने भारत में 35.1 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था.सनी देओल की नई फिल्म जाट ने 1997 में रिलीज हुई बॉर्डर को पीछे छोड़ दिया है. गोपीचंद मालिनेनी निर्देशित ने बॉर्डर का लाइफटाइम कलेक्शन का रिकॉर्ड तोड़ दिया है. सैकनिल्क के मुताबिक, बॉर्डर ने भारत में 39.3 करोड़ रुपये का लाइफटाइम कलेक्शन किया था, जबकि दुनियाभर में इसने 55.5 करोड़ रुपये कमाए थे.जाट को अजित कुमार की गुड बैड अग्ली से कड़ी टक्कर मिल रही है, जो अब 100 करोड़ रुपये की ओर बढ़ रही है. इस बीच, बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान की नई फिल्म सिकंदर अब बॉक्स ऑफिस पर फीका पड़ने लगा है. सिकंदर ने 15 दिनों में भारत में 109.1 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। अक्षय कुमार की केसरी चैप्टर 2 रिलीज से पहले हेडलाइन में छाई हुई है. फिल्म के ट्रेलर को दर्शकों और समीक्षकों से काफी सराहना मिली है. उम्मीद की जा रही है कि यह जाट को कड़ी टक्कर देगी. लेकिन तब तक, सनी देओल स्टारर के पास इसका पूरा फायदा उठाने के लिए शुक्रवार तक का समय है. उसके बाद, यह सब इस बात पर निर्भर करेगा कि केसरी 2 को किस तरह की समीक्षाएं मिलती हैं। जाट का निर्देशन गोपीचंद मालिनेनी ने किया है. जाट का निर्माण नवीन यरनेनी, यालामंचिली रविशंकर, टीजी विश्व प्रसाद और उमेश कुमार बंसल ने माइथरी मूवी मेकर्स, पीपल मीडिया फैक्ट्री और जी स्टूडियोज के बैनर तले किया है. वहीं, फिल्म में सनी देओल मुख्य भूमिका में हैं. रणदीप हुड्डा, रेजिना कैसंड्रा, विनीत कुमार सिंह और सैयामी खेर जैसे कलाकारों की टोली शामिल है. एक बड़ी छलांग के बाद, जाट ने सोमवार को अच्छी पकड़ बनाए रखी है।

निधि अग्रवाल ने हरि हर वीरा मल्लू में अपनी भूमिका के बारे में बात की

निधि अग्रवाल ने हरि हरा वीरा मल्लू में मुख्य महिला प्रधान भूमिका निभाई है, जिसमें पवन कल्याण एक डाकू की मुख्य भूमिका में हैं। यह पीरियड ड्रामा जल्द ही रिलीज़ के लिए तैयार है।हरि हर वीर मल्लू की टीम ने एक वीडियो जारी किया जिसमें निधि ने अपने किरदार पंचमी का खुलासा किया।मैं हरि हर वीर मल्लू में पंचमी का किरदार निभा रही हूँ। पंचम एक ऐसी लड़की है जो बलशाली, स्वतंत्र और भावुक है। उसकी अपनी कहानी और अपना उद्देश्य है, उन्होंने कहा। मैं कहूंगी कि पंचमी एक बहुत बहादुर और बुद्धिमान लड़की है। निधि अग्रवाल ने कहा कि यह किरदार निभाना बहुत मजेदार था।

ग्राउंड जीरो कश्मीर में रचेगी इतिहास, 38 साल बाद श्रीनगर में होने जा रहा पहली फिल्म का रेड कार्पेट प्रीमियर

ग्राउंड जीरो की श्रीनगर (कश्मीर) में होने जा रही प्रीमियर के जरिए मेकर्स की ये खास कोशिश है कि सबसे पहले ये फिल्म उन जांबाज जवानों और आर्मी अफसरों को दिखाई जाए, जो सरहद पर खड़े होकर हमारी हिफाजत कर रहे हैं. एक्शन थ्रिलर ग्राउंड जीरो को लेकर हर दिनों जोश और उत्साह बढ़ता जा रहा है. दमदार ट्रेलर रिलीज के बाद फिल्म के नए-नए पोस्टर्स ने भी लोगों की दिलचस्पी और बढ़ा दी है. इसी बीच अब ये फिल्म इतिहास रचने जा रही है, ग्राउंड जीरो होगी 38 साल बाद श्रीनगर (कश्मीर) में रेड कार्पेट प्रीमियर पाने वाली पहली फिल्म. प्रीमियर 18 अप्रैल को होगा और इसे लेकर फैंस और इंडस्ट्री दोनों में जबरदस्त क्रेज है। ग्राउंड जीरो 18 अप्रैल को श्रीनगर में होने वाले अपने रेड कार्पेट प्रीमियर के साथ नया इतिहास रचने जा रही है. हैरानी की बात ये है कि पिछले 38 सालों में श्रीनगर में किसी भी फिल्म का प्रीमियर नहीं हुआ और अब ग्राउंड जीरो इस खामोशी को तोड़ने वाली पहली फिल्म बनेगी. इस खास मौके पर फिल्म सबसे पहले दिखायी जाएगी उन जवानों और आर्मी अफसरों को, जो बॉर्डर पर खड़े होकर हमारी हिफाजत कर रहे हैं. ये कदम न सिर्फ फिल्म के देशभक्ति से जुड़े विषय को बखूबी दर्शाता है, बल्कि असली हीरोज को सच्ची श्रद्धांजलि भी है। ग्राउंड जीरो को दर्शकों से जबरदस्त प्यार मिल रहा है और इसके रिलीज को लेकर जोश साफ झलक रहा है. बीएसएफ द्वारा समर्थन प्राप्त इस फिल्म का ट्रेलर भी खूब सराहा गया, जिसने दर्शकों की उम्मीदों और उत्साह को और भी बढ़ा दिया है.इसके अलावा, फिल्म ग्राउंड जीरो की कहानी कश्मीर पर आधारित है और इसकी पूरी शूटिंग भी वहीं हुई है. इमरान हाशमी ने फिल्म में बीएसएफ कमांडेंट नरेंद्र नाथ दुबे का किरदार निभाया है, जिन्होंने गाजी बाबा को मार गिराने वाले ऑपरेशन का नेतृत्व किया था. यह मिशन बीएसएफ के पिछले 50 सालों में सबसे बेहतरीन ऑपरेशन के तौर पर दर्ज है. ग्राउंड जीरो एक सच्ची घटना पर आधारित है, जो भारतीय इतिहास के एक कम सुने गए लेकिन बेहद अहम अध्याय को दर्शकों के सामने लाती है।

गाजी बाबा जैश-ए-मोहम्मद का एक टॉप कमांडर और हरकत-उल-अंसार नाम के आतंकी संगठन का डिप्टी कमांडर था. उसे 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर हुए हमले का मास्टरमाइंड माना जाता है।

रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर ने फिल्म को एक्सेल एंटरटेनमेंट के तहत प्रोड्यूस किया है. फिल्म का निर्देशन तेजस देवास्कर ने किया है। इसके को-प्रोड्यूसर कासिम जगमगिया, विशाल रामचंदानी, संदीप सी सिधवानी, अर्हन बगाटी, टैलिसमैन फिल्म्स, अभिषेक कुमार और निशिकांत रॉय हैं. यह फिल्म 25 अप्रैल 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देने जा रही है।

भोजपुरी एक्ट्रेस आकांक्षा पुरी ने इंस्टाग्राम पर शेयर की ग्लैमरस तस्वीरें, फैंस हुए दीवाने

भोजपुरी फिल्मों और टीवी इंडस्ट्री की मशहूर एक्ट्रेस आकांक्षा पुरी ने अपने लेटेस्ट इंस्टाग्राम पोस्ट से इंटरनेट पर सनसनी मचा दी है. हाल ही में उन्होंने अपनी कुछ हॉट और ग्लैमरस तस्वीरें शेयर की हैं, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं. आकांक्षा ने इन तस्वीरों में ऑरेंज कलर की बोल्ड ड्रेस पहनी हुई है और उनके स्टाइलिश अंदाज को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं. उनके इस लुक पर फैंस और सेलेब्रिटीज कमेंट कर तारीफों के पुल बांध रहे हैं. किसी ने उन्हें ग्लैम क्वीन कहा तो किसी ने उनकी तुलना बॉलीवुड डीवाज से कर दी गौरतलब है कि आकांक्षा पुरी सिर्फ भोजपुरी फिल्मों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने बॉलीवुड और टीवी में भी अपनी एक खास पहचान बनाई है. बिग बॉस ओटीटी और कई म्यूजिक वीडियो में नजर आ चुकीं आकांक्षा अपने फैशन सेंस के लिए भी जानी जाती हैं। उनकी यह पोस्ट न सिर्फ उनके फैंस बल्कि फैशन लवर्स के बीच भी चर्चा का विषय बन गई है. इंस्टाग्राम पर उनकी इन तस्वीरों को अब तक हजारों लाइक्स और कमेंट्स मिल चुके हैं, जिससे यह साफ है कि उनकी फैन फॉलोइंग जबरदस्त है।

नरेश अगस्त्य राबिया खातून की फिल्म मेघलु चेप्पिना प्रेमा कथा का फर्स्ट लुक जारी

मेघलु चेप्पिना प्रेम कथा का फर्स्ट लुक जारी। नरेश अगस्त्य ने फिल्म मथु वडालारा से प्रसिद्धि पाई। उन्होंने काली और विकटकवि जैसी फिल्मों में अभिनय किया। अब वह एक रोमांटिक फिल्म के साथ मनोरंजन करने आ रहे हैं और इसका दिलचस्प नाम मेघलु चेप्पिना प्रेम कथा है। इस फिल्म में राबिया खातून मुख्य भूमिका में हैं और इसका निर्देशन विपिन ने किया है। निर्माताओं ने फिल्म का फर्स्ट लुक जारी किया और यह रोमांटिक तत्वों से मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। इसमें मुख्य जोड़ी और गिटार दिखाया गया है और इसने फिल्म प्रेमियों के बीच उत्सुकता के स्तर को तुरंत बढ़ा दिया है। फिल्म में राधिका सरथकुमार मुख्य भूमिका में हैं, जबकि जस्टिन प्रभाकरन संगीत निर्देशक हैं। सिनेमैटोग्राफी मोहन कृष्ण द्वारा की गई है।

फैशन को नया मोड़ दे रहे हैं कढ़ाई वाले कपड़े के हैंडबैग, जानिए उनके बारे में

भारतीय हस्तशिल्प की दुनिया में कढ़ाई वाले कपड़े के हैंडबैग एक अनोखा स्थान रखते हैं। ये न केवल सुंदर दिखते हैं, बल्कि इन्हें बनाने में लगी मेहनत और कला भी इन्हें खास बनाती है।इन बैग्स की खासियत यह है कि ये पारंपरिक कला को आधुनिकता के साथ जोड़ते हैं।आइए इन खास हैंडबैग्स के बारे में विस्तार से जानते हैं और जानते हैं कि कैसे ये भारतीय संस्कृति और फैशन का बेहतरीन मेल हैं।

बनारसी सिल्क से बने बैग

बनारसी सिल्क भारतीय रेशम का एक अहम हिस्सा है। इसके बने बैग्स में पारंपरिक बनारसी कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें बेहद आकर्षक बनाती है। इन बैग्स का इस्तेमाल खास मौकों पर किया जाता है, जैसे शादी-ब्याह या त्योहारों पर।इनकी चमकदार सतह और नाजुक कढ़ाई इन्हें खास बनाती है। बनारसी सिल्क बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं, जिससे ये लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं।

कांजीवरम सिल्क बैग्स

कांजीवरम सिल्क दक्षिण भारत की मशहूर कढ़ाई वाली वस्त्रों में शामिल है।इसके बने बैग्स में कांजीवरम की पारंपरिक डिजाइन को शामिल किया जाता है, जिससे ये बहुत ही खूबसूरत दिखते हैं।इन बैग्स का रंग-बिरंगा पैटर्न और सोने-चांदी की तारों का उपयोग इन्हें खास बनाता है।कांजीवरम सिल्क बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं, जिससे ये लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं।

जरी की कारीगरी वाले बैग्स

जरी की कारीगरी भारतीय हस्तशिल्प का एक अहम हिस्सा है। इसके बने बैग्स में जरी की कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें बहुत ही खास बनाती है।जरी की कारीगरी वाले बैग्स का इस्तेमाल रोजमर्रा की जिंदगी में किया जा सकता है या विशेष अवसरों पर भी।इनकी चमकदार सतह और नाजुक कढ़ाई इन्हें आकर्षक बनाती है। जरी की कारीगरी वाले बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं।

लखनवी चिकनकारी बैग्स

लखनवी चिकनकारी उत्तर प्रदेश की मशहूर हस्तकला है। इसके बने बैग्स में चिकनकारी की नाजुक कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें बहुत ही आकर्षक बनाती है।

लखनवी चिकनकारी बैग्स का इस्तेमाल रोजमर्रा की जिंदगी में किया जा सकता है

या विशेष अवसरों पर भी। इनकी नाजुक कढ़ाई और सुंदर डिजाइन इन्हें खास बनाती है।

लखनवी चिकनकारी वाले बैग्स न केवल देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि ये मजबूत भी होते हैं, जिससे ये लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं।

गर्मियों में बार-बार पेशाब आना कई बीमारियों के हो सकते हैं लक्षण, जानिए क्या कहते हैं डॉक्टर

आमतौर पर लोग गर्मी के मौसम में कम पेशाब करते हैं. ऐसा इसलिए क्योंकि शरीर के ज्यादातर विषाक्त पदार्थ पसीने के जरिए बाहर निकल जाते हैं. अगर आपको गर्मियों में भी बार-बार पेशाब आने की जरूरत महसूस होती है, तो सावधान हो जाइए. ऐसा इसलिए क्योंकि यह एक या दो नहीं बल्कि कई बीमारियों का लक्षण हो सकता है. गर्मियों में बार-बार पेशाब आने से यूटीआई, किडनी की समस्या और मूत्राशय की समस्या हो सकती है. गर्मियों में आमतौर पर ज्यादा पानी पिया जाता है. इसलिए हम यह मान लेते हैं कि चूंकि हम अधिक पानी पीते हैं, इसलिए हम अधिक पेशाब भी करते हैं. हालांकि, गर्मियों में बार-बार पेशाब आना कई गंभीर बीमारियों का संकेत हो सकता है. आइए खबर के माध्यम से जानते हैं गर्मियों में बार-बार पेशाब आने के क्या लक्षण हैं...

यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन या यूटीआई

इसका सबसे आम कारण यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन (यूटीआई) है. इस समस्या के कारण बार-बार पेशाब आता है और पेशाब करते समय जलन होती है. इससे बुखार भी हो सकता है.

डायबिटीज

डायबिटीज के रोगियों को भी बार-बार पेशाब आता है. इसमें डायबिटीज के शुरुआती लक्षण भी शामिल हैं। इस बीमारी की शुरुआत हर आधे घंटे में पेशाब आने से होती है.

डिहाइड्रेशन

गर्मियों में बार-बार पेशाब आने का एक कारण डिहाइड्रेशन भी हो सकता है. शरीर में पानी की कमी होने से पेशाब गाढ़ा हो जाता है और आपको बार-बार पेशाब जाना पड़ता है.

मूत्राशय या प्रोस्टेट की समस्या

कभी-कभी मूत्राशय ओवरएक्टिव हो जाता है, जिससे बार-बार पेशाब आने की जरूरत पड़ती है. इसके अलावा, अगर प्रोस्टेट ग्रंथि में कोई समस्या है, तो आपको बार-बार पेशाब जाना पड़ सकता है।. ऐसा इसलिए क्योंकि प्रोस्टेट ग्रंथि में समस्या होने पर सारा पेशाब एक बार में नहीं निकलता. इसलिए, अगर आपको गर्मियों में बार-बार पेशाब आता है, तो सतर्क हो जाएं और अपने डॉक्टर से सलाह लें.

खेल समाचार

विराट ने कई पोस्ट हटाने पर दिया ये जवाब

मुम्बई (ए)। आजकल आईपीएल खेल रहे भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने अचानक ही अपने अकाउंट से प्रमोशन, पेड पार्टनरशिप और विज्ञापनों से जुड़े सभी पोस्ट हटा लिए हैं। उन्होंने इन पोस्ट्स को रील सेक्शन में डाल दिए दिया। कोहली के ऐसा करते ही सोशल मीडिया पर कई तरह ही अटकलें लगायी जाने लगीं। वहीं इसी को लेकर अब विराट ने अपनी ओर से सफाई दी है। कोहली के इंस्टाग्राम पर पोस्ट सेक्शन में अब उनकी फैमिली, वर्कआउट सेशन के साथ-साथ आईपीएल 2025 से जुड़ी कुछ फोटो और वीडियो ही हैं। इसी को लेकर विराट ने कहा कि मैं सोशल मीडिया को लेकर एक ऐसी जगह पर

पहुंच गया हूं जहां मैं बहुत ज्यादा इसपर ध्यान नहीं दे पाउंगा। भविष्य के बारे में कुछ भी कहना अभी से संभव नहीं है। इसी कारण मुझे काफी कुछ हटाना पड़ा है ।

चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद विराट कोहली की ब्रांड वैल्यू बढ़ गई है। इस बात को खुद विराट ने भी स्वीकार किया है। विराट कोहली के सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा फॉलोवर्स हैं। इंस्टाग्राम पर उन्हें 271 मिलियन और एक्स पर 67.7 मिलियन लोग फॉलो करते हैं। ब्रांड एंडोर्समेंट के मामले में कोहली दुनिया के शीर्ष एथलीटों में शामिल हैं। पिछले साल टी20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद कोहली ने टी-20 से संन्यास ले लिया था। इस फॉर्मेट में उन्होंने 125 मैच खेले हैं। उन्होंने एक शतक और 38 अर्धशतक के साथ 4188 रन बनाए हैं।

ओलंपिक मेडलिस्ट मीराबाई चानू को मिली बड़ी जिम्मेदारी

-भारतीय भारोत्तोलन महासंघ एथलीट आयोग की बनी अध्यक्ष

नई दिल्ली, (आरएनएस)। पदक विजेता मीराबाई चानू को भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के एथलीट आयोग का अध्यक्ष चुना गया है. चानू ने कहा कि, वह इस भूमिका को साथी भारोत्तोलकों की आवाज को बुलंद करने के अवसर के रूप में देखते हैं.टोक्यो पदक विजेता मीराबाई ने एक विज्ञप्ति में कहा, मैं भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के एथलीट आयोग के अध्यक्ष के रूप में मुझे चुनने के लिए अपना बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं।

चहल की फिरकी में फंसा केकेआर, पंजाब ने 111 रन डिफेंड करके रचा इतिहास

चंडीगढ़, (आरएनएस)। पंजाब ने आईपीएल इतिहास में अब तक के सबसे कम स्कोर का बचाव करके इतिहास रच दिया है. मुल्लांपुर में खेले गए आईपीएल 2025 के 31 वें मैच में पंजाब ने पहले 15.3 ओवर में 111 रन बनाए और फिर केकेआर को 15.1 ओवर में 95 रन पर ढेर कर दिया. पंजाब की जीत में अहम भुमिका निभाने वाले चहल ने 4 ओवर में 28 रन देकर 4 विकेट झटके, जिसकी वजह से उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड दिया गया.

111 रनो का बचाब करने के लिए पंजाब के गेंदबाजों ने शानदार गेंदबाजी की, युजवेंद्र चहल के अलावा तेज गेंदबाज मार्को जानसन ने तीन विकेट चटकाए और बाकी गेंदबाजों ने एक एक विकेट हासिल किए, जिसकी वजह से पंजाब आईपीएल के इतिहास में सबसे कम स्कोर का बचाव करने में कामयाब रहा.

112 रनों का पीछा करते हुए, कोलकाता ने अपने दोनों सलामी बल्लेबाज सुनील नरेन (5) और क्विंटन डी कॉक (2) को जल्दी-जल्दी खो दिया. उसके बाद कप्तान अजिंक्य रहाणे और अंगकृष रघुवंशी ने सतर्क रुख अपनाया और पावरप्ले के अंत में टीम को 55/2 पर पहुंचा दिया. दोनों ने 60 रनों की साझेदारी की और केकेआर मैच जीतने की राह पर डाल दिया.

मुम्बई और सनराइजर्स के बीच मुकाबला आज

मुंबई (ए)। मुंबई इंडियंस की टीम गुरुवार को अपने घरेलू मैदान पर सनराइजर्स हैदराबाद का मुकाबला करेगी। इस मैच में दोनो ही टीमें जीत के लिए पूरी ताकत लगा देंगी। मुम्बई को अपने घरेलू मैदान का लाभ मिलेगा जिससे उसका पलड़ा भारी नजर आता है। वानखेड़े स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के अनुकूल रही है, लेकिन गेंदबाज भी इससे मिलने वाली उछाल का फायदा उठाने की कोशिश करेंगे। मुम्बई को जीत के लिए सनराइजर्स के बल्लेबाजों को बड़े स्कोर बनाने से रोकना होगा। टीम इस मैच में अपने मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद करेगी पिछले मैच में बुमराह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये थे। बुमराह की गेंदों पर दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मैच में काफी रन बने। ऐसे में सनराइजर्स के आक्रामक बल्लेबाज ट्रेविस हेड, अभिषेक शर्मा, ईशान किशन और हेनरिक क्लासेन उनपर बड़े शॉट लगाने का पूरा प्रयास करेंगे।मुंबई की परेशानी अपने स्टार बल्लेबाज रोहित शर्मा का फार्म में नहीं होना भी है। रोहित अभी तक पांच मैचों में एक बार भी बड़ा स्कोर नहीं बना पाये। वह अब तक केवल 56

रन बना पाए हैं। इससे मुंबई की टीम का प्रदर्शन भी खराब रहा है और वह अभी तक केवल दो मैच जीत जीत कर अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

मुंबई इंडियंस की की बल्लेबाजी अभी तक इस सत्र में सूर्यकुमार यादव और तिलक वर्मा पर ही आधारित रही है पर अगर टीम को जीत दर्ज करनी है तो अन्य बल्लेबाजों को भी रन बनाने होंगे। वहीं दूसरी ओर सनराइजर्स की टीम भी अच्छी स्थिति में नहीं है। इस बार उसके बल्लेबाज रनों के लिए संघर्ष करते दिखे हैं। पहले मैच में टीम ने 286 रन बनाये थे पर उसके बाद से ही उसके लिए 200 रनों तक पहुंचा भी संभव नहीं हुआ है हालांकि पंजाब किंग्स के खिलाफ वह 246 रन के लक्ष्य तक पहुंचने में सफल रही जिससे टीम प्रेरित होना चाहेगी। पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच में अभिषेक ने 141 रन बनाए थे। अंक तालिका में सनराइजर्स की टीम अभी नौवें स्थान पर है।

मुंबई इंडियंस

हार्दिक पांड्या (कप्तान), रोहित शर्मा, रियान रिकेल्टन (विकेटकीपर), सूर्यकुमार यादव, विल जैक, तिलक वर्मा, , नमन धीर, जसप्रीत बुमराह, ट्रेंट बोल्ट, मिचेल सेंटनर, कर्ण शर्मा।

सनराइजर्स हैदराबाद

पैट कमिंस (कप्तान), अभिषेक शर्मा, ट्रैविस हेड, ईशान किशन, नीतीश कुमार रेड्डी, हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर), अनिकेत वर्मा, अभिनव मनोहर, मोहम्मद शमी, हर्षल पटेल, जीशान अंसारी, एहसान मलिंगा।

11 करोड़ अब होंगे वसूल, एलएसजी की टीम से जुड़ा 156.7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाला गेंदबाज

लखनऊ,(आरएनएस)। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज मयंक यादव की लखनऊ सुपर जायंट्स (आईपीएल) में वापसी की खबर क्रिकेट प्रशंसकों के लिए उत्साहजनक हैं. मयंक, जो अपनी रफ्तार भरी गेंदबाजी के लिए जाने जाते हैं, चोट के कारण कुछ समय तक बाहर थे. अब उनकी वापसी से आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन कर रही आईपीएल की टीम की गेंदबाजी इकाई को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

लखनऊ सुपर जायंट्स के तेज गेंदबाज मयंक यादव की चोट से रिकवरी हो गई है. एलएसजी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो पोस्ट कर इसकी जानकारी दी है. मयंक यादव आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन के बाद चोटिल हो गए थे. उन्होंने उस सीजन में केवल 4 मैच खेले, जिसमें 12.14 की औसत और 6.98 की इकोनॉमी रेट से 7 विकेट लिए. उनकी सबसे तेज गेंद 156.7 किमी/घंटा थी, जो उस सीजन में किसी भारतीय गेंदबाज की सबसे तेज गेंद थी।

सौरभ चौधरी ने शूटिंग वर्ल्ड कप में रचा इतिहास, 10 मीटर एयर पिस्टल में जीता ब्रॉन्ज मेडल

पेरू, (आरएनएस)। पूर्व एशियाई खेलों और युवा ओलंपिक चैंपियन सौरभ चौधरी ने पेरू के लीमा में लास पालमास शूटिंग रेंज में वर्ष के दूसरे अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) विश्व कप राइफल/पिस्टल/शॉटगन चरण के पहले दिन 10 मीटर एयर पिस्टल पुरुष स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर अपनी झोली में एक और विश्व कप पदक जोड़ लिया.चीन के हू काई ने 246.4 के स्कोर के साथ गोल्ड मेडल जीता, जो विश्व रिकॉर्ड से सिर्फ 0.1 कम था, जबकि ब्राजील के ओलंपिक पदक विजेता फेलिप अल्मेडा वू ने सिल्वर मेडल जीता, जबकि सौरभ को 219.1 के साथ ब्रॉन्ज मेडल से संतुष्ट होने पड़ा.इससे पहले, दो भारतीय, सौरभ और वरुण तोमर ने शीर्ष-8 फाइनल में जगह बनाई थी, जिसमें सौरभ ने क्वालीफिकेशन में 578 के स्कोर के साथ पांचवां स्थान, जबकि वरुण ने 576 के साथ 8वां स्थान हासिल किया था. दोनों भारतीयों ने फाइनल में भी शानदार शुरुआत की, जिसमें सौरभ दूसरे और वरुण तीसरे स्थान पर रहे, जबकि दूसरे चीनी झी यू ने शुरुआती पांच शॉट के बाद बढ़त हासिल की.हालांकि, इसके बाद भारतीय जोड़ी को 10-रिंग तक पहुंचने में मुश्किल हुई, क्योंकि पहले दो सिंगल्स शॉट के बाद हू आगे निकल गए. तोमर ने अपने 14वें शॉट के लिए 10.9 का स्कोर किया, जिससे वह सातवें स्थान पर पहुंच गए. सौरभ ने भी अपने 14वें शॉट के लिए 10.7 का स्कोर बनाया. इसके बाद सौरभ 15वें और 16वें शॉट में 10.2 और 10.6 के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गए।

विदेश समाचार

अमेरिका का चीन पर कड़ा प्रहार, टैरिफ में भारी वृद्धि कर 245 प्रतिशत किया; वजह भी बताई

न्यूयॉर्क (आरएनएस)। अमेरिका ने चीन से आयातित वस्तुओं पर लगने वाले टैरिफ में भारी वृद्धि करते हुए इसे 245 प्रतिशत कर दिया है। यह कदम चीन द्वारा जवाबी कार्रवाई करते हुए अपने आयात पर शुल्क 125 प्रतिशत तक बढ़ाने के बाद उठाया गया है। पहले अमेरिका द्वारा चीनी सामान पर 145 प्रतिशत शुल्क लगाया जा रहा था, लेकिन अब इसमें एक साथ 100 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है।

अमेरिका का यह फैसला काफी सख्त माना जा रहा है, खासकर तब जब उसने भारत समेत कई अन्य देशों पर लगाए गए शुल्क को 90 दिनों के लिए रोक दिया है। माना जा रहा है कि इस अवधि में अमेरिका इन देशों के साथ व्यापार समझौते कर सकता है। भारत और अमेरिका के बीच तो बैकचैनल से व्यापार समझौते पर बातचीत भी शुरू हो गई है और संभावना है कि इसके लिए मई से बैठकों का दौर भी शुरू हो सकता है।

चीन के प्रति अमेरिका का रुख स्पष्ट है कि वह शुल्क का जवाब शुल्क से देगा और चीन को अपनी गलती माननी चाहिए। ट्रंप प्रशासन का कहना है कि अमेरिका दूसरे देशों के सामान पर कम कर लगाता है, जबकि चीन और भारत जैसे कई देश उसके निर्यात पर भारी कर वसूलते हैं। इसी के जवाब में अमेरिका ने यह व्यापार युद्ध शुरू किया है।

व्हाइट हाउस का कहना है कि चीन का रवैया अड़ियल है, जबकि दुनिया के लगभग 75 देशों ने व्यापार समझौते के लिए उससे संपर्क किया है। इसी कारण अमेरिका ने कई देशों पर शुल्क को 90 दिनों के लिए टाल दिया है, ताकि इस दौरान किसी सहमति पर पहुंचा जा सके। इस अवधि में केवल 10 प्रतिशत का सामान्य शुल्क ही लागू रहेगा। गौरतलब है कि अमेरिका ने भारत पर भी 26 प्रतिशत शुल्क लगाया था, जिसे फिलहाल रोक दिया गया है।

अफगानिस्तान : भूकंप के झटकों से हिला हिंदुकुश क्षेत्र, रिक्टर स्केल पर तीव्रता 5.9 मापी गई

काबुल, (आरएनएस)।अफगानिस्तान के हिंदुकुश क्षेत्र में बुधवार सुबह भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (एनसीएस) के अनुसार, रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.9 मापी गई है।

एनसीएस ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, बुधवार तड़के स्थानीय समयानुसार 4:43 बजे अफगानिस्तान के हिंदुकुश क्षेत्र में भूकंप आया। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.9 मापी गई है। भूकंप का केंद्र 35.83 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 70.60 डिग्री पूर्वी देशांतर पर 75 किलोमीटर की गहराई पर था।

अभी तक किसी के हताहत होने या इमारतों को नुकसान की कोई तत्काल खबर नहीं है, लेकिन अधिकारी और मानवीय एजेंसियां स्थिति पर करीब से नजर रख रही हैं। हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला (जो उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान में फैली है) यह अत्यधिक भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्र का हिस्सा है, जहां जटिल टेक्टोनिक संरचना के कारण भूकंप बार-बार आते हैं।

अफगानिस्तान भारतीय और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों के बीच टकराव वाले क्षेत्र में स्थित है, जो इसे विशेष रूप से भूकंपीय गतिविधि के लिए संवेदनशील बनाता है। संयुक्त राष्ट्र मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय (यूएनओसीएचए) ने देश की प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता को दोहराया, और कहा कि बार-बार आने वाले भूकंप उन समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं, जो पहले से ही दशकों के संघर्ष और पुराने अविकास से कमजोर हो चुके हैं।

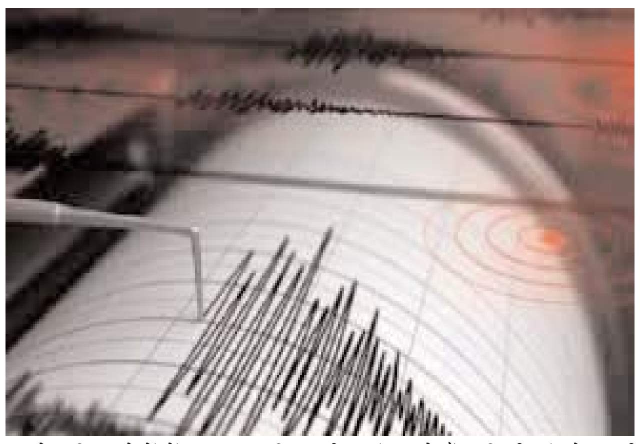

रेड क्रॉस के अनुसार, अफगानिस्तान में विशेष रूप से हिंदुकुश जैसे भूगर्भीय रूप से अस्थिर क्षेत्रों में हर साल शक्तिशाली भूकंप आते हैं। पश्चिमी प्रांत हेरात भी एक महत्वपूर्ण फॉल्ट लाइन पर स्थित है, जो देश के भूकंपीय जोखिम को और बढ़ाता है।अक्टूबर 2023 में, 6.3 तीव्रता सहित कई शक्तिशाली भूकंपों ने पश्चिमी अफगानिस्तान, विशेष रूप से हेरात को तबाह कर दिया था, जिसमें 1,000 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी और हजारों लोग विस्थापित हुए थे। उस त्रासदी ने क्षेत्र में आपदा प्रतिक्रिया प्रणालियों को मजबूत करने और दीर्घकालिक लचीलापन योजना की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया था।

पूर्व राष्ट्रपति और उनकी पत्नी को भ्रष्टाचार के मामले में 15 साल की सजा

लीमा (आरएनएस)। पेरू की एक अदालत ने पूर्व राष्ट्रपति ओलांटा हुमाला और उनकी पत्नी नादिन हेरेडिया को धन शोधन का दोषी पाते हुए 15 साल जेल की सजा सुनाई है।

जज नायको कोरोनाडो की अध्यक्षता वाली थर्ड नेशनल कोलीजिएट क्रिमिनल कोर्ट ने मंगलवार को यह फैसला सुनाया। अन्य न्यायाधीशों ने फैसले का समर्थन किया। अदालत ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति और उनकी पत्नी ने लगभग नौ महीने पूर्व-ट्रायल हिरासत (ट्रायल से पहले की गिरफ्तारी) में बिताए हैं, उन्हें सजा की अवधि में शामिल माना जाएगा।

गौरतलब है कि पूर्व राष्ट्रपति और उनकी पत्नी पर आरोप है कि ब्राज़ील की निर्माण कंपनी ओडेब्रेच ने 2006 से 2011 के बीच नेशनलिस्ट पार्टी को चुनावी अभियान के लिए उन्हें अवैध रूप से धन मुहैया कराया था।

गेंद चीन के पाले में है, हमें नहीं चिनफिंग को समझौता करने की जरुरत', टैरिफ विवाद पर बोला अमेरिका

वाशिंगटन(आरएनएस)। टैरिफ मामले पर चीन और अमेरिका के बीच तनातनी का माहौल है। ट्रंप के टैरिफ के जवाब में चीन ने भी 125 फीसदी शुल्क अमेरिकी सामान पर लगा दिया है। इस बीच मंगलवार को व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने चीन से जुड़े सवालों के जवाब दिए। टैरिफ विवाद के बाद टिकटॉक सौदे पर भी ग्रहण लगते दिख रहे हैं।

इस बीच ट्रंप प्रशासन ने 19 जून तक टिकटॉक को अमेरिका में कामकाज करने की मंजूरी दी है। जब व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव से पूछा गया कि अगर चीन बातचीत को तैयार नहीं होता है तो इस पर लेविट ने कहा कि दो महीने का समय काफी है। मैं आगे नहीं बढ़ना चाहती। उपराष्ट्रपति इन वार्ताओं और बातचीत का नेतृत्व कर रहे हैं। राष्ट्रपति भी इसमें शामिल हैं।

जब उनसे पूछा गया कि क्या ट्रंप टिकटॉक डील करने के लिए चीन पर टैरिफ कम करेंगे तो लेविट ने कहा कि चीन पर राष्ट्रपति की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप के एक बयान को साझा किया और कहा कि ओवल ऑफिस में ट्रंप ने यह बात मुझसे कही थी कि गेंद चीन के पाले में है। चीन को हमारे साथ समझौता करने की जरूरत है। हमें उनके साथ समझौता करने की जरूरत नहीं है।

फ्लाइट में लगी 21 करोड़ की लॉटरी, एयर होस्टेस ने उड़ते विमान में कर डाली ये हरकत

न्यूयॉर्क(आरएनएस)। एक एयर होस्टेस के आसमान में उस समय पंख लग गए जब उड़ान के दौरान उसकी किस्मत चमकी और वो उड़ रहे विमान में करोड़पती बन गई। उसके लिए खुशी का ठिकाना नहीं था, जिसके बाद उसने हवा में ही अपना रिजाइन दे दिया।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एयर होस्टेस ने कैसीनो गेम में 500 रुपये लगाकर 21 करोड़ की रकम जीत ली, कैसिनो एक्सपोज्ड की रिपोर्ट के अनुसार, कैसीनो डेज प्लेटफॉर्म एक लिमिटेड टाइम ऑफर चला रहा था, जिसमें इस महिला ने एक लाख रुपये की राशि

जमा 1 लाख तक की जमा राशि पर 150 प्रतिशत बोनस मिल रहा था। एयर होस्टेस बताती है कि इस गेम को खेलने के लिए पहले मैंने एक लाख लगाए उसे में दस और फिर 20 और देखते ही देखते मैंने अंत में 21,83,02,672 खाते में आ गए। इस रकम को जीतने के बाद मैंने कैसीनो डेज की सपोर्ट टीम से संपर्क किया और उन्होंने मुझे कहा कि हां ये खबर सच है और आप अब एक करोड़पति बन चुकी हैं। इसके बाद महिला ने फ्लाइट का इंटरकॉम उठाया और एक अप्रत्याशित घोषणा कर डाली, जिसमें उसने कहा कि देवियों और सज्जनों, यह आपकी एयर होस्टेस बोल रही है और यह मेरी आखिरी फ्लाइट है। ये बात सुनते ही लोग घबरा गए लेकिन जब महिला ने अपनी कहानी बताई तो केबिन में मौजूद लोग चीयर्स करने लगे।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ब्राजील के साओ पाउलो में ब्रिक्स कृषि मंत्रियों की बैठक के दौरान ब्राजील के कृषि व्यापार समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करते हुए।

बांग्लादेश का बड़ा फैसला, भारत से धागे के आयात पर लगा दी रोक; जानें फैसले की वजह और इसका असर

ढाका (ए.)। बांग्लादेश के नेशनल बोर्ड ऑफ रेवेन्यू (एनबीआर) ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए भारत से धागे (सूत) के आयात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। इस नए नियम के तहत बेनापोल, भोमरा, सोनामस्जिद, बंगलाबंधा और बुरिमारी जैसे प्रमुख भूमि बंदरगाहों के माध्यम से अब धागे का आयात नहीं किया जा सकेगा। यह कदम बांग्लादेश टेक्सटाइल मिल्स एसोसिएशन (बीटीएमए) द्वारा की गई शिकायतों के बाद उठाया गया है। बीटीएमए ने दावा किया था कि भारत से सस्ते सूत के आयात के कारण स्थानीय कपड़ा उद्योग को भारी नुकसान हो रहा है।बीटीएमए के अनुसार, भारत से जमीनी रास्ते से आयातित सूत की कीमत समुद्री मार्ग से आने वाले सूत की तुलना में काफी कम है, जिसके चलते स्थानीय मिलों को बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई हो रही है। उदाहरण के तौर पर, बांग्लादेश में 30 सिंगल सूत की कीमत 3.40 डॉलर प्रति किलोग्राम है, जबकि भारत में यह 2.90 डॉलर और वियतनाम में 2.96 डॉलर प्रति किलोग्राम है। इसके अतिरिक्त, बीटीएमए ने यह भी आरोप लगाया कि भूमि मार्ग के बंदरगाहों पर पर्याप्त बुनियादी ढांचे और जांच सुविधाओं की कमी के कारण आयातक गलत घोषणाएं करके टैक्स चोरी कर रहे हैं। हालांकि, बांग्लादेश के गारमेंट निर्यातकों ने इस निर्णय को आत्मघाती बताया है। बांग्लादेश निटवेयर मैन्युफैक्चरर्स एंड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन (बीकेएमईए) के अध्यक्ष मोहम्मद हातेम ने कहा कि यह

कदम तैयार कपड़ों के निर्यातकों के लिए लागत बढ़ा देगा और छोटे-मध्यम उद्यमों (एसएमबी) के लिए बाजार में प्रतिस्पर्धा और भी मुश्किल हो जाएगी। गौरतलब है कि बांग्लादेश का गारमेंट उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और यह भारत से लगभग 95 प्रतिशत सूत आयात पर निर्भर करता है। वर्ष 2024 में बांग्लादेश ने 1.25 मिलियन मीट्रिक टन सूत का आयात किया था, जो 2023 की तुलना में 31.5 प्रतिशत अधिक था।

जल गंगा संवर्धन अभियान को बनाएं जन आंदोलन- कलेक्टर

कलेक्टर ने नागरिकों से जल गंगा संवर्धन अभियान में अधिक से अधिक सहभागिता की अपील की

कलेक्टर एवं जिला पंचायत सीईओ ने इमलीखेड़ा, लीलाखाड़ी और आमामाई पहुंचकर किया जल संरक्षण कार्य में श्रमदान

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर बालागुरू के., जिला पंचायत सीईओ डॉ नेहा जैन तथा जनपद अध्यक्ष नावड़ी बाई सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने ग्राम इमलीखेड़ा, लीलाखाड़ी एवं आमामाई में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत आयोजित जल संरक्षण कार्य में श्रमदान किया। उन्होंने गांव में चल रहे अन्य जल संरक्षण के कार्यों का निरीक्षण भी किया। इस अवसर पर कलेक्टर बालागुरू के. ने ग्रामवासियों से जल संरक्षण के कार्य में सहभागिता की अपील करते हुए कहा कि जिले में ग्रीष्म ऋतु को दृष्टिगत रखते हुए जिले के स्टॉप डेम, चेक डैम सहित बोरी बंधान कार्य किया जाए, जिससे ग्रीष्म ऋतु में किसान, पशु, पक्षी आदि के लिए भी जल की उपलब्धता बनी रहे। जिले में पुराने तालाबों, चेक डैम, स्टॉप डैम की मरम्मत और जीर्णोद्धार कार्य भी किया जाये।

कलेक्टर बालागुरू के. ने मैदानी अमले को निर्देश दिए कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले में जल स्त्रोत जैसे तालाब, कुआं, बावड़ी इत्यादि का जीर्णोद्धार, मरम्मत तथा निर्माण कराया जाए। उन्होंने कहा कि व्यापक स्तर पर जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल स्त्रोतों का संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य किये जाए। कलेक्टर ने कहा कि जल संरचनाओं के साथ सफाई के साथ गहरीकरण भी किया जाए जिससे ज्यादा से ज्यादा वर्षा के जल का भराव हो सके। कलेक्टर बालागुरू के ने कहा कि जल के संरक्षण व संवर्धन के विशेष अभियान ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' की सफलता के लिए आमजन, जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं की सहभागिता जरूरी है। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण, पौधरोपण, पुराने नदी, तालाब एवं बावड़ी जैसे जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार तथा संरक्षण के लिए सरकार व समाज, दोनों ही स्तर पर कार्य होना चाहिए। जल संरक्षण कार्यक्रम में जनपद अध्यक्ष नावड़ी बाई, जनपद सीईओ नमिता बघेल, जन अभियान परिषद ब्लॉक समन्वयक प्रदीप सेंगर, स्व सहायता समूह की महिलाएं तथा बड़ी संख्या में ग्रामवासी सम्मिलित हुए।

पोस्ट मेट्रिक हॉस्टल में व्याप्त अनियमित्ताओं को लेकर अभाविप ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति हॉस्टल जिला संयोजक को सौंपा ज्ञापन

सीहोर (निप्र)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई सीहोर द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति हॉस्टल जिला संयोजक को ज्ञापन सौंपा। नगर सहमंत्री खुशाल मोटवानी ने बताया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन हैं, जो सदैव छात्र-छात्राओं की समस्याओं के समाधान हेतु करने सदैव तत्पर रहता है। कुछ समय पूर्व पोस्ट मेट्रिक की वार्डन द्वारा छात्रा की तस्वीर वायरल की गई एवं छात्रा से दुर्व्यवहार किया गया। जिस पर अभाविप की मांग है उक्त वार्डन द्वारा किये गये कृत्य की जांच कर कार्यवाही की जावे। साथ ही छात्रावास में भोजन की समस्या - छात्रावास में छात्राओं को जो भोजन दिया जाता है उसकी गुणवत्ता ठीक नहीं है जिससे कई छात्राओं के स्वास्थ्य पर भी असर पड़ा है भोजन की गुणवत्ता में सुधार किया जाए। छात्रावास में साफ सफाई - छात्रावास में साफ सफाई की समस्या भी है जिससे छात्रावास में आय दिन कीड़े, जहरीले जीव जंतु भी छात्रावास में देखे गए है जिससे किसी भी प्रकार की घटना घट सकती है। छात्रावास एवं छात्रावास के आस पास की सफाई कराई जाए जिससे कोई भी प्रकार की घटना से बचा जा सके।

भगवान परशुराम जन्मोत्सव को लेकर घर-घर दे रहे निमंत्रण, भव्य चल समारोह निकाला जाएगा

सीहोर (निप्र)। प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी सर्व ब्राह्मण समाज के तत्वाधान में समाज के आराध्य भगवान परशुराम के जन्मोत्सव को आस्था और उत्साह के साथ मनाए जाने के लिए ब्राह्मण समाज के द्वारा घर-घर जाकर ब्राह्मण परिवारों को आमंत्रण पत्र का वितरण किया जा रहा है। भीषण गर्मी के बावजूद भी ब्राह्मण समाज के पदाधिकारी और विप्रजन पूरे उत्साह के साथ शहर सहित आस-पास के स्थानों पर पहुंचकर भव्य चल समारोह का प्रचार-प्रसार कर रहे है। गत दिनों भी युवाओं, महिलाओं सहित अन्य समाजजनों की बैठक का आयोजन किया जा चुका है।बुधवार को ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष दीपक शर्मा के नेतृत्व में शहर के अनेक स्थानों पर घर-घर पहुंचकर ब्राह्मणजनों को आगामी दिनों में होने वाले पांच दिवसीय महोत्सव को लेकर निमंत्रण दिया। इस मौके पर विप्रजनों ने भगवान परशुराम के नारे भी लगाए। इस वर्ष चल समारोह का अध्यक्ष मनीष शर्मा को अध्यक्ष मनोनित किया गया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए समाज के मीडिया प्रभारी प्रियांशु दीक्षित ने बताया कि भगवान परशुराम के जन्मोत्सव को लेकर 30 अप्रैल को सुबह दस बजे शहर के खजांची लाइन स्थित धर्मशाला में पूजन अर्चना की जाएगी। वहीं आगामी चार मई को भव्य जन्मोत्सव चल समारोह निकाला जाएगा।

अजाक्स ने मुख्यमंत्री के नाम तहसीलदार इछावर को सौंपा ज्ञापन

सीहोर(निप्र)। अजाक्स के द्वारा माननीय मुख्यमंत्री के नाम तहसीलदार इछावर श्रीमती रितु भार्गव को बाबुलाल मालवीय के नेतृत्व में ज्ञापन सौंपा। जिसमें अजाक्स की प्रमुख मांगों में बेकलॉक पदों की पूर्ति शीघ्र की जाये। प्रमोशन में आरक्षण हेतु सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता एवं मध्य प्रदेश के स्पेशल काउंसिल मनोज गोरकेला के अनुरूप नवीन पदोन्नति शीघ्र लागू की जाये एवं ठेका पद्धति/आउट सोर्सिंग पद्धति को तत्काल बंद किया जाये। अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति समय पर दी जाय। मध्यप्रदेश के लोकसेवकों के हित के लिये पुरानी पेंशन शीघ्र लागू की जाये। ज्ञापन सौंपने वालों में बाबूलाल मालवीय कार्यवाहक जिलाध्यक्ष अजाक्स सीहोर, लखनलाल दुगारिया,, महेश मालवीय, नन्दकिशोर अटेरिया, कुमेरसिंह बालोनिया, मेहरवान सिंह बामनिया, कमल मालवीय कवि आदि शामिल है।

हनुमान यात्रा पर पत्थर मारने वाले जिहादियों पर हो बुलडोजर कार्रवाही

विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल ने दिया सीएम के नाम का ज्ञापन

सीहोर(निप्र)। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल ने गुना के कर्नल गंज में स्थित मदीना मस्जिद से जिहादियों के द्वारा हनुमान जयंती यात्रा पर योजनापूर्वक पत्थर बरसाने की घटना की कड़ी निंदा की है। आसामाजिक तत्व जिहादियों पर बुलडोजर कार्रवाही और गिरफतारी सहित पीएफआई कनेक्शन की जांच की मांग को लेकर बुधवार को विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल ने मुख्यमंत्री के नाम का ज्ञापन कलेक्ट्रेट पहुंचकर डिप्टी कलेक्टर सुधीर कुशवाहा को दिया। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल ने कहा कि 12 अप्रैल को गुना के कर्नल गंज में स्थित मदीना

मस्जिद से श्री हनुमान जन्मउत्सव यात्रा पर जिहादियों की भीड़ ने योजनापूर्वक हमला किया था।

यह हमला सुनियोजित था। हमले के दौरान आमजन द्वारा मोबाइल से बनाए गए वीडियो के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मस्जिद में पहले से ही लोग जमा थे। उन्होंने हनुमान यात्रा आता देखकर नारेबाजी शुरू की और आक्रामक होकर श्री हनुमान जी का वेश धारण कर चल रहे युवक से मारपीट की और मस्जिद और आसपास के घरों से पथराव कर दिया जिससे भगदड़ मच गई और कई हिन्दू घायल हो गए।

विहिप ने आरोपियों के साथ साजिशकर्ताओं को भी हिरासत में लेकर कठोर कार्यवाही करने, जिहादियों के अवैध मकान, व्यवसाय, पर न्याय पूर्ण बुल्डोजर की कार्यवाही करने,आरोपियों के पीएफआई सिमी के सम्बन्धो की विस्तृत जांच करने एवं समय पर उचित कार्रवाही नहीं करने वाले पुलिस प्रशासन के अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाही करने और सडयंत्र पूर्वक हिन्दू समाज के लागों पर की गई झूठी एफआईआर को निरस्त किए जाने की मांग की है।

ईडी की दुर्भावनापूर्ण कार्यवाही के विरोध में महामहीम राष्ट्रपति के नाम कांग्रेसजनों ने सौंपा ज्ञापन

मानव श्रृंखला बनाकर जताया विरोध

भाजपा की तानाशाही केन्द्र सरकार कर रही एजेंसियों का दुरूपयोग-राजीव गुजराती

सीहोर(निप्र)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर सीहोर जिलाध्यक्ष राजीव गुराजती के नेतृत्व में मानश्रंखला बनाकर भाजपा केन्द्र सरकार के इशारे पर इडी के विरूद्ध जोरदार नारे बाजी कर महामहीम राष्ट्रपति के नाम तहसील कार्यालय पहुंचकर अनुविभागीय अधिकारी तन्मय वर्मा को ज्ञापन सौंपा। राजीव गुजराती ने ज्ञापन का वाचन करते हुए बताया कि आज जब भारत 75 वर्षों से अधिक पुराने लोकतंत्र की विरासत का दावा करता है, तब देश के भीतर एक खतरनाक प्रवृत्ति लगातार गहराती जा रही है, केंद्र सरकार द्वारा सरकारी एजेंसियों के दुरुपयोग की। विशेष रूप से विपक्षी नेताओं को निशाना बनाकर बदले की भावना से की जा रही कार्रवाई, लोकतंत्र की आत्मा को निरंतर घायल कर रही है।

हाल ही में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी जी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जी के विरुद्ध नेशनल हेराल्ड प्रकरण में प्रवर्तन निदेशालय (ED) द्वारा आरोप पत्र दाखिल किया गया है। यह न केवल अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि स्पष्ट रूप से यह केंद्र सरकार की राजनीतिक प्रतिशोध की संकीर्ण मानसिकता का भी प्रतीक है।

जिस परिवार ने इस देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर किया, जिनके अपने बलिदान हुए, उस गांधी-नेहरू परिवार को केंद्र की सत्ता में बैठी भाजपा सरकार बार-बार अपमानित करने का असफल प्रयास कर रही है। 2014 से लगातार यह देखा जा रहा है कि विपक्षी नेताओं के खिलाफ ईडी, सीबीआई, आईटी जैसी एजेंसियों का मनमाना उपयोग किया जा रहा है! इससे यह स्पष्ट है कि यह एक राजनीतिक हथियार के रूप में एजेंसियों को प्रयोग करने की रणनीति है।ज्ञापन के माध्यम से कांग्रेसजनों ने मांग की है कि महोदय आप भारत के संविधान के संरक्षक हैं, कृपया इस गंभीर प्रकरण में स्वत: संज्ञान लें और केंद्र सरकार से जवाब तलब करें कि बिना किसी मूल शिकायत के किस आधार पर वर्षों पुराने प्रकरण को पुन: खोलकर विपक्ष के शीर्ष नेताओं को प्रताड़ित किया जा रहा है? राजनीतिक प्रतिद्वंदिता की आड़ में लोकतंत्र को कुचलने की साजिश को रोका जाए। देश की संवैधानिक संस्थाओं की गरिमा बचाने हेतु भी आप तत्काल हस्तक्षेप करें।इस प्रकार की कार्रवाइयों पर तत्काल निष्पक्ष और स्वतंत्र न्यायिक जांच की व्यवस्था हो, जिससे देश की जनता के बीच एजेंसियों की निष्पक्षता और लोकतंत्र की साख बची रह सके।ज्ञापन में महामहीम महोदया जी से आग्रह है कि विपक्षी नेताओं पर प्रवर्तन निदेशालय (इडी) की दुर्भावनापूर्ण कार्यवाही पर रोक लगाते हुए न्याय और लोकतंत्र की रक्षा करें।

मेहंदी, सिंदूर और अनार के दाने से श्री यंत्र की अर्चन की

शिव-शक्ति दिव्य अनुष्ठान में आज किया जाएगा गन्ने का रस से शिव का अभिषेक

सीहोर(निप्र)। शहर के सीवन तट पर हनुमान मंदिर में शिव प्रदोष सेवा समिति के तत्वाधान में एक माह तक आयोजित होने वाले शिव शक्ति दिव्य अनुष्ठान वैशाख महापर्व का आयोजन किया जा रहा है। इस मौके पर यहां पर आधा दर्जन से अधिक विप्रजनों के द्वारा सुबह हवन यज्ञ से पूर्व सभी ने श्री महालक्ष्मी की पूजा-अर्चना की और मेहंदी, सिंदूर और अनार के दाने से श्री यंत्र की अर्चन की और दोपहर में हवन में वेद मंत्रों के साथ आहुतियां दी गई। पंडित पवन व्यास और कुणाल व्यास सहित अन्य ने बुधवार को भगवान गणेश और माता लक्ष्मी के श्री यंत्र की अर्चन की।

पंडित श्री व्यास ने सुबह यहां पर विराजमान मां लक्ष्मी, मां काली और सरस्वती की विशेष अर्चन की गई और दोपहर में आहुतियां दी गई। महालक्ष्मी की वंदना से श्रद्धालुओं को मां लक्ष्मी की कृपा से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि लक्ष्मी कृपा प्राप्ति के लिए श्रीयंत्र का सरल पूजन विधान है जिसकी सहायता से साधारण व्यक्ति भी विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस यंत्र को तांबे, चांदी और सोने किसी भी धातु पर बनाया जा सकता है। ऐसी मान्यता है कि श्रीयंत्र, मां लक्ष्मी का प्रिय यंत्र है, इसीलिए इसकी पूजा करने से देवी लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है। घर में विधि-विधान के साथ श्रीयंत्र की पूजा और अराधना करने से घर में सुख-संपत्ति, सौभाग्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। लेकिन इसकी स्थापना और पूजा करने के लिए कुछ बातों को मानना बेहद जरूरी है। धन की देवी मां लक्ष्मी को कहा गया है, जिसकी पूजा सनातन धर्म में लक्ष्मी प्राप्ति के लिए सर्वोपरि है। हर कोई पूरी विधि विधान के साथ देवी लक्ष्मी और गणेश की पूजा अर्चना करते हैं, ताकि उनकी कृपा बनी रहे। मां लक्ष्मी होगी प्रसन्न, क्योंकि हर देवी देवता के लिए सनातन धर्म में अलग-अलग तरह के मंत्र होते हैं जो आपकी राशि और मुहूर्त के हिसाब से आपके ऊपर आने वाली बाधाओं को दूर करती है।

ग्राम पंचायत बरखेड़ादेवा स्थित तालाब के जीर्णोद्धार और गहरीकरण की मांग

सीहोर(निप्र)। सीहोर जिले की ग्राम पंचायत बरखेड़ादेवा स्थित तालाब के जीर्णोद्धार और गहरीकरण की मांग ग्रामीणजनों द्वारा की गई है । ज्ञातव्य है कि निर्माण उपरांत उक्त तालाब को कृषि विभाग द्वारा ग्राम पंचायत बरखेड़ादेवा को रख रखाव एवं सख्क्षय हेतु हस्तांतरित कर दिया गया था लेकिन ग्राम पंचायत द्वारा टैंक का रख-रखाव नहीं किया गया, जिससे इसके पाल एवं मोहरे टूट जाने से पानी का भराव नहीं हो पाया, जिससे तालाब निर्माण के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई तथा इससे कोई जनहित का लाभ प्राप्त नहीं हुआ। ग्रामीणों का कहना है कि उक्त टैंक के जीणोद्धार एवं गहरीकरण हेतु सीएम हेल्पलाईन में भी शिकायत की गई थी किन्तु ग्राम पंचायत द्वारा कोई कार्य नहीं कराया गया उल्टा यह कहा कि टैंक उमेदसिंह की भूमि में कृषि विभाग द्वारा बनाया गया है इसलिए कार्य किया जाना संभव नहीं है, जबकि नाले की अपनी स्वयं की शासकीय भूमि ग्राम खाईखेड़ा के राजस्व पत्रों में सर्वे नं. 597, 598, 599, 600 कुल रकबा 3.93 एकड़ दर्ज है। फिर उमेदसिंह की भूमि में टैंक क्यों बना होगा, यह जांच का विषय है, साथ ही यह टैंक मात्र 0.400 है. क्षेत्र में बनवाया गया था। इस बारे में ग्राम पंचायत बरखेडादेवा द्वारा अपने पत्र दिनांक 9 जनवरी 2003, जो कि उपसंचालक कृषि को लिखा गया था, में उल्लेख किया गया था कि स्थान का चयन कर लिया गया है, सर्वे कराकर निर्माण कराये जाने हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। वहीं अब ग्राम पंचायत का कहना है कि कृषि विभाग द्वारा टैंक उमेद सिंह की भूमि में बनाया गया है।

सर्व ब्राह्मण महिला मंडल की 21 अप्रैल को बैठक

सीहोर (निप्र)। सर्व ब्राह्मण समाज महिला मंडल द्वारा भगवान परशुराम जी के जन्मोत्सव के संबंध मे महिला मंडल द्वारा आयोजित गतिविधियों के संबंध मे विशेष बैठक का आयोजन 21 अप्रैल सर्व समाज ब्राह्मण की खजाँची लाइन स्थिति धर्मशाला मे शाम 5 बजे रखी गई है जिसमे सर्व ब्राह्मण समाज मातृ शक्ति सादर आमंत्रित है। बैठक में आगामी दिनों विप्र समाज के आराध्य भगवान परशुराम के जन्मोत्सव महोत्सव के अंतर्गत होने वाले भव्य आयोजन और कार्यक्रमों को लेकर आयोजित की जाएगी।

इस संबंध में जानकारी देते हुए सर्व ब्राह्मण महिला मंडल की अध्यक्ष सुश्री नीलम शर्मा ने बताया कि 21 अप्रैल को शाम पांच बजे आगामी महोत्सव में होने वाले आयोजन और कार्यक्रमों को लेकर धर्मशाला में बैठक का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने सभी महिलाओं और युवतियों से बैठक में शामिल होने की अपील की।

देवास-भोपाल मार्ग पर मेनटेनेंस कार्यो में तेजी

सीहोर (निप्र)। आगामी वर्षा काल को ध्यान में रखते हुए मध्य प्रदेश सड़क विकास निगम द्वारा देवास-भोपाल मार्ग पर मेंटेनेंस कार्य तेजी से जारी हैं। प्रतिदिन हजारों वाहनों की आवाजाही वाले इस प्रमुख मार्ग पर यात्रा को सुरक्षित और सुगम बनाए रखने के उद्देश्य से डामरीकरण, रोड मार्किंग और शोल्डर की भराई जैसे कार्यों को प्राथमिकता के साथ अंजाम दिया जा रहा है। सड़क मेंटेनेंस प्रबंधक पियूष सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्षा ऋतु के दौरान यातायात को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए सभी आवश्यक मेंटेनेंस कार्य युद्धस्तर पर चल रहे हैं। पुल और पुलियों की सफाई का काम भी प्रारंभ कर दिया गया है, ताकि बरसात से पूर्व सभी कार्य पूर्ण किए जा सकें और सड़क पर जलभराव जैसी स्थिति न उत्पन्न हो। मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम एवं डी बी सी पी एल का लक्ष्य आगामी मानसून में मार्ग पर यात्रियों को सुरक्षित और सुगम सफर का अनुभव करना है ।

आईईएस पब्लिक स्कूल में क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

सीहोर(निप्र)। आईईएस पब्लिक स्कूल, सीहोर द्वारा छात्रों के लिए अपनी खेल भावना दिखाने के लिए क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन आईईएस कैम्पस में किया जा रहा है। टूर्नामेंट का शुभारंभ अतुल तिवारी, सचिव, जिला क्रिकेट संघ, ब्रजेश शर्मा, जिला खेल अधिकारी, शिक्षा विभाग, सीहोर, रवीन्द्र यादव, टीआई, सीहोर एवं देवंश सिंह, सीईओ, आईईएस यूनिवर्सिटी, भोपाल द्वारा किया गया। उन्होने सभी टीम के प्रतिभागियो से हाथ मिलाया एवं टूर्नामेंट के लिए उनका उत्साहवर्धन किया। टूर्नामेंट में आईईएस पब्लिक स्कूल सहित सीहोर एवं आस पास के क्षेत्र से 10 टीम ने प्रतियोगिता में भाग लिया एवं अपने जौहर दिखाये।

आईईएस क्रिकेट टूर्नामेंट के लीग मुकाबलो में पॉवर हिटर्स बनाम डायनेमिक स्टार्स के बीच खेल गया जिसमे टॉस पॉवर हिटर्स ने जीता और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया एवं 144 रन बनाकर ऑल आउट हो गई वही डायनेमिक स्टार्स ने 5 विकेट खोकर 145 रन बनाए एवं 5 विकेट से मैच जीत जिसमे यशराज कोलावत को 7 विकेट लिए प्लेयर ऑफ द मैच दिया गया। दूसरा मैच डायनेमिक स्टार्स बनाम वारियर्स के बीच खेल गया जिसमे डायनेमिक स्टार्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और 140 रन बनाए वही वारियर्स की टीम 113 पर सिमट गई और मैच डायनेमिक स्टार्स 27 रन से विजयी रहा।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिंटर्स, प्लाट नं.21,सेक्टर-एच,इंडस्ट्रियल एरिया,गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा 09 वैशाली नगर ग्राम शेरपुर शंकर मंदिर के पास सीहोर म.प्र. से प्रकाशित।
ब्यूरो प्रमुख -भावना सक्सेना। स्थानीय प्रतिनिधि-मनोज दीक्षित, सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। मो.9425025999 ई-मेल - dainikkshitijkiran@gmail.com, वेबसाइट- www.kshitijkiran.com